आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 5 | अंक 10 | उदयपुर सोमवार 01 जून 2020 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

हिम्मत, साहस और हौंसले से कोरोना को भगाना होगा : डॉ. खराड़ी

कोरोना संक्रमण को लेकर उदयपुर के मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. दिनेश खराड़ी से डॉ. तुक्तक भानावत की बातचीत के प्रमुख अंश-

प्रश्न : उदयपुर, राजस्थान में कोरोना को आप किस रूप में देखते हैं ?

उत्तर : जिस तरह पूरे विश्व और भारत में कोरोना से संक्रमित रोगी मिल रहे हैं, उसी क्रम में राजस्थान तथा उदयपुर में कोरोना से संक्रमित रोगी मिल रहे हैं।

प्रश्न : यहां प्रशासन द्वारा किये गये उपायों को आप कितना उपयोगी और कारगर मानते हैं ?

उत्तर : यहां प्रशासन एवं चिकित्सा विभाग जिस मुस्तैदी तथा तत्परता से कार्य कर रहा है वह उल्लेखनीय एवं अनुकरणीय है। उदयपुर विश्व का बेहतरीन पर्यटन शहर है, इस दृष्टि से भी हमारा अथक प्रयत्न रहेगा कि यहां कोरोना का संक्रमण अधिक नहीं फैले।

शहर की प्राचीन बसावट में, एक क्षेत्र में जहां घनी आबादी निवास करती है वहां होट स्पॉट बनने से कोरोना संक्रमित मरीजों की संख्या में एकाएक वृद्धि हुई है जिसको हमने कंट्रोल कर लिया है। इस क्षेत्र के अतिरिक्त उदयपुर में 45 स्थानों पर कोरोना से संक्रमित मरीज पाये गये हैं वहां अच्छी बात यह है कि उन मरीजों के घर के सदस्य के अतिरिक्त पड़ौसी अथवा उस क्षेत्र में अन्य कोई भी व्यक्ति संक्रमित नहीं पाया गया।

प्रश्न : इस दृष्टि से आप नागरिक की भूमिका को कैसे देखते हैं ?

उत्तर : उदयपुर के आम नागरिकों की भूमिका अत्यन्त ही सराहनीय कही जानी चाहिये। यहां का प्रत्येक नागरिक कोरोना को लेकर सजग एवं समझ-दृष्टि लिये है। जिला प्रशासन एवं चिकित्सा विभाग के साथ भी उनका पूरा-पूरा सहयोग रहता है। कर्फ्यू तथा लोकडाउन के दौरान हर नागरिक की सकारात्मक भूमिका रहती है। पूर्णत: परिपालना के साथ सभी का सम्मिलित सहयोग कोरोना की आपदा से मुक्ति का रहता है।

प्रश्न : आज जिस स्टेज में कोरोना है उसके लिए आप क्या कहना चाहेंगे ?

उत्तर : अब जो कोरोना के मरीज बढ़ रहे हैं, इसका मुख्य कारण प्रवासी नागरिकों का उदयपुर में आना है। उदाहरण के तौर पर उदयपुर के बाहर से आये नागरिकों में से अधिकतर वे कोरोना संक्रमित पाये गये हैं जो मुम्बई से आये हैं। भविष्य में भी बाहर से आने वाले इस तरह के रोगियों की संख्या बढ़ सकती है।

प्रश्न : आपके विभाग की क्या उपलब्धियां रहीं ?

उत्तर : आशा सहयोगिनी, प्रसाविका, नर्सिंग स्टाफ, एनएचएम स्टाफ, वार्ड बॉय तथा स्वीपर से लेकर चिकित्सक एवं चिकित्सा विभाग के समस्त अधिकारी दिन-रात कड़ी मेहनत कर रहे हैं। सरकार के द्वारा समय-समय पर जारी की जा रही गाइड लाइन की पालना करते हुए कोरोना के संक्रमण को रोकने के लिए अथक प्रयास हो रहे हैं। सच तो यह है कि हिम्मत, साहस और हौंसले से हमें कोरोना पर विजय पानी होगी।

प्रश्न : कोरोना के प्रकोप और प्रसार की दृष्टि से उदयपुर को आप कहां तक ठीक ठहराते हैं ?

उत्तर : जैसा कि मैंने बताया, जिला प्रशासन, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग तथा उदयपुर के समस्त नागरिकों के संयुक्त प्रयासों से ही हम कोरोना के संक्रमण को रोके हुए हैं अन्यथा संक्रमित मरीजों की संख्या इससे कई गुना ज्यादा हो सकती थी।

प्रश्न : भविष्य के लिए आपके पास कौनसी योजनाएं विचाराधीन हैं ?

उत्तर : कोरोना से संक्रमित मरीज यदि बढ़ते हैं तो हम पंचायत समिति स्तर पर कोविड केयर सेन्टर चिन्हित करेंगे। इनमें असिमटोमेटिक (जिनमें कोरोना के लक्षण नहीं हैं) एवं माइल्ड सिमटोमेटिक (जिनमें कम लक्षण हैं) को वहां पर रखकर उनका समुचित इलाज करेंगे। असिमटोमेटिक पोजेटिव मरीज जिनके घर में अलग से रहने के लिए कमरा मय शोचालय उपलब्ध हो तथा मरीज की देखभाल करने हेतु कोई भी घर का सदस्य उसकी सार संभाल करने के लिए तैयार हो, ऐसे मरीजों को हम उनके घर पर ही होम कोरेंटाइन करेंगे। उनका सुपर विजन सम्बन्धित प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र का चिकित्सा अधिकारी अथवा पंचायत समिति स्तर का अधिकारी करेगा।

प्रश्न : आप आज जिस जगह हैं, किस तरह का महसूस करते हैं ?

उत्तर : एक सीएमएचओ होने के नाते मैं यह कहना चाहूंगा कि मुझे मेरी पूरी टीम के साथ-साथ निदेशालय और जिला प्रशासन का पूरा सहयोग मिल रहा है। यह टीमवर्क है और टीम भावना से ही हम काम कर रहे हैं। इसका फल भी हमें आशानुरूप मिल रहा है।

प्रश्न : कोरोना को लेकर भारतीय संदर्भ में, राजस्थान की भूमिका को कैसे चिन्हित करेंगे ?

उत्तर : अन्य राज्यों की तुलना में हमारे राजस्थान में माननीय मुख्यमंत्रीजी, चिकित्सामंत्रीजी एवं राज्यस्तरीय अधिकारियों ने समय रहते एक से एक बढ़कर अच्छे कदम उठाये जिससे आज हमारे राज्य में सर्वाधिक सेम्पिलिंग होते हुए भी जहां पॉजिटिव और मृत्यु दर कम है वहीं रिकवरी रेट ज्यादा है।

विष्णुदत्त विश्नोई : उनके जैसा और न कोई

- जगदीश विजयवर्गीय' -

विष्णुदत्त विश्नोई। राजस्थान के चूरू जिले के राजगढ़ थानाधिकारी। मैं उनसे मिला तो नहीं लेकिन लोग कहते हैं, उनकी दबंगई बाजीराव सिंघम जैसी थी। निर्भीक और निष्पक्ष। ईमानदार भी, जो आज के दौर में कम ही पाए जाते हैं। आपको जानकारी न हो तो बतादूं कि सिंघम अजय देवगन अभिनीत बॉलीवुड फिल्म है, जिसमें अजय थानेदार बाजीराव सिंघम के किरदार में हैं।

बाजीराव सिंघम ऐसा थानेदार है, जो सत्य की राह पर चलता, पीड़ितों की मदद करता और अपराधियों को दण्ड तक पहुंचाता है। बड़े-भारी गुण्डे से भी डरता नहीं बल्कि भिड़ जाता है। जयकान्त शिकरे नामक बड़ा-भारी गुण्डा लाख कोशिशों के बावजूद सिंघम को न तो खरीद पाता है, न ही दबा पाता है। आखिर पूरी पुलिस फोर्स सिंघम का साथ देती है और जीत सिंघम की ही होती है। सिंघम यानी पुलिस। वह जीत अकेले सिंघम की नहीं बल्कि पूरी पुलिस फोर्स की होती है।

अब सवाल यह है कि विष्णुदत्त विश्नोई के प्रकरण में जयकान्त शिकरे कौन है? एक है या अनेक हैं? इस एक या अनेक शिकरे ने विष्णुदत्त को खरीदने की कोशिश की या दबाने की? इस शिकरे से शासन-प्रशासन में कौन मिला हुआ, डरा हुआ या दबा हुआ था? शासन-प्रशासन में कौन ऐसा बेईमान या डरपोक था, जो विष्णुदत्त को जीत की बजाय मौत की राह पर ले गया? ये सवाल तो शोध के विषय हैं ही, बड़ा सवाल पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) भूपेन्द्र सिंह के बयान से भी उठ खड़ा होता है।

डीजीपी सिंह ने कहा है कि विष्णुदत्त मेरी नजर में टॉप-10 थानेदारों में शामिल थे। यानी राजस्थान में अभी कम से कम नौ थानेदार और ऐसे हैं, जो हूबहू सिंघम भले ही न हों लेकिन उनके लक्षण काफी कुछ सिंघम जैसे होंगे। कौन हैं ये नौ थानेदार? डीजीपी विष्णुदत्त को तो बचा नहीं पाए, क्या शेष नौ सिंघमों को बेखौफ काम करने का माहौल मुहैया करा पाएंगे? इन सिंघमों के इर्द-गिर्द भी क्या जयकान्त शिकरे नहीं होंगे? उन शिकरियों को डीजीपी चिह्नित कर पाएंगे? पुलिस फोर्स उन शिकरियों से भिड़ने और इन नौ सिंघमों का साथ देने का साहस दिखा पाएगी?

जैसा कि सामने आया, 22 मई को फायरिंग की घटना हुई तो विष्णुदत्त शाम को आरोपियों के पीछे हो लिए। हरियाणा तक पहुंचे और देर रात तक आखिर तीन-चार संदिग्धों को पकड़ लाए।

फिर 23 मई को तड़के सूरज उगने ही वाला था कि विष्णुदत्त के जीवन का सूरज अस्त हो गया। जिस थाने के वह अधिकारी थे, उसी के परिसर में बने अपने आवास पर पंखे के हुक से फांसी का फंदा बांधा और उससे झूल गए। इससे पहले अपने एक साथी से चैटिंग के दौरान उन्होंने पीड़ा जाहिर भी की कि हमें गंदी राजनीति के भंवर में फंसाने के प्रयास हो रहे हैं। इसीलिए स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति चाहता हूं।

आखिर किसी थाने का अधिकारी और वह भी सिंघम जैसा, आत्महत्या क्यों करेगा? एक पुत्र और एक पुत्री का पिता क्यों जीवनलीला समाप्त करना चाहेगा? विष्णुदत्त का किसी थाने से तबादला होता तो उस थाना क्षेत्र के अनेक लोग इस जुगाड़ में जुट जाते थे कि जैसे-तैसे उनका तबादला रद्द हो जाए।

कई आला अधिकारी ऐसे हैं, जो चाहते थे कि विष्णुदत्त उनके इलाके के किसी थाने में आ जाएं और अपराधों पर लगाम कसें। इसके लिए सिफारिशें तक होती थी। ऐसे विष्णुदत्त आत्मघाती कदम उठाने को मजबूर हुए, कोई तो बड़ा कारण होगा? ऐसे ही तो हथियार नहीं डाल दिए होंगे?

दरअसल, यह महज एक सिंघम की मृत्यु नहीं है। यह पुलिस फोर्स के हर उस अफसर और जवान के मनोबल की मौत है जो पूरी ईमानदारी, निष्ठा और जज्बे के साथ फर्ज को अन्जाम दे रहे हैं।

- शेष पृष्ठ सात पर

खोज-खबर

कोटा दरबार द्वारा पड़ चितेरे का बहुमान-सम्मान

पड़ चित्रांकन के ख्यातनाम कलाकार जोशी चितेरे पहुंचे हुए ज्योतिषी भी रहे। उनके परिवारों में ऐसे कई प्राचीन पंचांग तथा चित्रों का संग्रह मिलता है। प्राचीन महलों तथा हवेलियों में उनके हाथों बने भित्ति चित्रण, रागमाला चित्र तथा कपड़ों, कागजों, चमड़ों आदि पर बने चित्र उनकी उत्कृष्ट कलाकारी, रूचि तथा सामाजिक धार्मिक एवं शाही जीवनशैली के जीते जागते दस्तावेज इतिहास तथा संस्कृति बोध को जीवन्त करते हैं।

अपने प्रवास के दौरान चित्तौड़गढ़ निवासी रामगोपाल जोशी ने अपने निवास 40-ए कुंभानगर में 11 अगस्त 2002 को लम्बी बातचीत के दौरान बहुत सारी जानकारी से मुझे समृद्ध किया। वहीं उन्होंने अपने पास सुरक्षित कपड़े पर हाथ के बने दो पंचांग भी बताये। उनमें से एक पंचांग संवत् 1938 का सूरजमल चौथमल जोशी भीलवाड़ा निवासी का तथा दूसरा उसके पास के गांव पुर निवासी रामलाल नाथूलाल जोशी द्वारा चित्रित था। ये पंचांग एक फुट चौड़े तथा सात-आठ फीट लम्बे थे।

बीतचीत के दौरान रामगोपालजी ने बताया कि जोशी परिवार मेवाड़ में चित्तौड़गढ़, कपासन, शाहपुरा, पुर, रायपुर, गंगापुर तथा भीलवाड़ा में बसे हुए हैं। कुछ परिवार बाहर जाकर बस गये पर वहां भी वे अपना खानदानी काम करते रहे और बड़ा नाम कमाया। हाड़ौती क्षेत्र के बारां कस्बे की घटना का जिक्र करते हुए उन्होंने बताया कि वहां रह रहे जोशी ईश्वरीलाल बड़े प्रसिद्ध ज्योतिषी थे। एकबार कोटा दरबार उनसे मिलने आये। इस पर उन्होंने कहा कि मेरी परीक्षा इसी में है कि मैं जो रूक्का लिखकर हजूर को नजर कर रहा हूं वह महल में जाकर ही दरबार द्वारा खोला जाय। रूक्के में लिखा था कि दरबार जब अपने महल में प्रवेश करें तो महल का कोट (परकोटा) लांघकर ही भीतर पधारें।

वहां से विदा होते दरबार ने सोचा कि महल के चार दरवाजे हैं। उनमें से किसी का उपयोग नहीं कर परकोटे की दीवाल फांदकर महल में प्रवेश किया ताकि ज्योतिषीजी की भविष्यवाणी गलत सिद्ध हो सके। महलों में जाकर दरबार ने उत्सुकतावश वह लिफाफा खोला तो उसमें भी यही लिखा था कि दरवाजे की बजाय कोट फांदकर दरबार महल में प्रवेश करेंगे। यह पढ़ दरबार ने ईश्वरीलालजी के भविष्य कथन का लोहा मान उन्हें सम्मान देने का सोचा।

उन्होंने दर्जी को बुलवाकर उनके लिए पोशाक सिलवाई और बग्घी वाले के साथ भेज कहलवाया कि उन्हें इसे पहन दरबार में हाजिर होना है। ईश्वरीलाल हाजिर हुए। दरबार ने उन्हें एक सौ ग्यारह बीघा जमीन का पट्टा देते हुए यथोचित सम्मान किया। ईश्वरीलाल बारां में ब्राह्मणों के मोहल्ले में रहते थे। रामगोपालजी ने बताया कि ईश्वरीलालजी के पौत्रों के पास उनकी बहुत सारी ज्योतिष सम्बन्धी महत्वपूर्ण और मूल्यवान सामग्री सुरक्षित संभली हुई है जो उन्होंने भी देखी।

भोपे का भाव और देवता का चमत्कार

पड़ चितेरे रामगोपाल जोशी ने मालवा स्थित नागदा के आलोट गांव स्थित कालेश्वर मन्दिर की घटना का जिक्र करते बताया कि वहां प्रतिवर्ष ही नानेश्वर नाम से बड़ा प्रसिद्ध मेला भरता है। मेले का खास आकर्षण भोपे को देवता का भाव आना है। नाग देवता पधारते हैं और बीमार व्यक्ति का जहर चूस उसे चंगा करते हैं।

मनचले लोग सब जगह पहुंच जाते हैं। वे देव-देवरा और भोपा-भाव में कोई विश्वास और आस्था नहीं रख कभी-कभी मसखरी पर उतर आते हैं। एकबार दो मसखरों को रोळ सूझी फलस्वरूप एक व्यक्ति के दांतली के तीन हल्के घाव कर उसे वहां लाकर सुला दिया।

इतने में चौकी लगी। भोपाजी को देवता का भाव आया। भाव में भोपाजी बोले, इसे उठाओ और चलता करो। साथ वाले मसखरे बोले, बावजी इसे सांप ने काट खाया है सो आपको ठीक करना है। इस पर भाव-वेश भोपाजी थोड़े मुस्काये और बोले- 'रोळां मत करो, यह तो ठीक ही है। इसे चलता करो।' यह सुन मसखरों पर भी मुस्कान चढ़ आई। बोले, यह तो जहर के मारे सुस्त पड़ा है बावजी इसीलिए आपकी शरणां लाये हैं। भोपाजी कुछ नहीं बोले। उन्हें गुस्सा चढ़ा। गुस्से ही गुस्से में उन्होंने आव देखा न ताव, पास पड़ी दांतली का बांसा लिया। उसमें से फुफकार मारता बेंत भर का सांप निकला जो देखते-देखते अपनी काया बढ़ाता रहा और जोर से उसे ऐसा डसा कि वह वहीं ढेर हो गया। वहां उपस्थित जातरू यह चमत्कार देख स्तंभित रह गये। सभी ने एक स्वर से 'नागेश्वर बावजी की जय' का उच्चारण कर पूरे वातावरण को गूंजा दिया।

- डॉ. महेंद्र भानावत

सिरेमल सेठिया का निधन

उदयपुर (का. सं.)। रतलाम में शिक्षा-साहित्य तथा धर्म-संस्कृति के अध्येता सिरेमल सेठिया का 78 वर्ष की उम्र में 25 मई को निधन हो गया। वे छोटीसादड़ी गोदावत जैन गुरुकुल के स्नातक रहे और जीवनपर्यन्त जैन समाज से जुड़े रहकर शैक्षणिक संस्थाओं में अध्यापन कर्म कर आदर्श श्रावक के रूप में अपनी पहचान बनाई। अपनी सरल प्रकृति, सहज मुस्कान, मिलनसारिता और सेवाभावी सौहार्द के कारण वे मित्रों में सौम्य बने रहे।

बनवारीदत्त जोशी ने बताया कि रतलाम में रेलवे सर्विस के दौरान उनका सेठियाजी से गाढ़ा सम्पर्क बना। साथ-साथ उन्होंने पुस्तकों का आदान-प्रदान करते हुए बी. ए. की परीक्षा अच्छे अंकों से उत्तीर्ण की। गुरुदेव सागरमलजी बीजावत के सान्निध्य में उन्होंने सेठियाजी के सगाई दस्तूर तथा शादी समारोह में अग्रणी भूमिका निभाई। सेठियाजी के पिता सरलमना सुसंस्कारी श्रावक थे। उन्हीं के संस्कारों से सेठियाजी का जीवन मण्डित हुआ। जैन शिक्षण संस्था में प्रिंसिपल के पद को सुशोभित करते हुए वे अन्त तक आदर्श धार्मिक पंडित ही बने रहे।

डॉ. महेन्द्र भानावत ने अपने पुराने मित्र के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि गुरुकुल छोटीसादड़ी में सन् 1952 से 54 के अध्ययनकाल में उनसे सेठिया का सम्पर्क हुआ जो जीवनपर्यन्त बना रहा। सेठिया के जीवन पर गुरुकुलीय जीवन पद्धति और शिक्षण-दीक्षण का जबर्दस्त प्रभाव पड़ा। एक मध्यमवर्गीय सुदामा-मैत्री की तरह दोनों की जो घनिष्टता रही वह अमोल, अलभ्य तथा अनिर्वचनीय ही है। ऐसे मित्र अब चिराग-ढूंढ़े भी दुर्लभ हैं।

सेठियाजी के निधन पर उदयपुर, रतलाम, इन्दौर, अहमदाबाद, बीकानेर, छोटीसादड़ी, पूना, चित्तौड़गढ़ आदि स्थानों से सर्वश्री सागरमलजी बीजावत, मदन कटारिया, कांतिलाल लोढ़ा, पारस नलवाया, डॉ. कविता मेहता, शान्तिलाल पटवा, हंसमुख भाई, मूलचंद गांधी, डॉ. सतीश मेहता, वर्धमान सियाल, शान्ति चोरड़िया, डॉ. कहानी भानावत, कुन्दन चोरड़िया, डॉ. धीरज गांधी, जितेन्द्र मेहता, डॉ. तुक्तक भानावत, देवीलाल चावत, ग्रेसिम की मेडम धूपिया एवं चौधरीजी ने संवेदनाएं व्यक्त कीं।

कलमकार कवियों द्वारा जनकवि दरक का सम्मान

उदयपुर (का. सं.)। कुंभलगढ़ निवासी जनकवि माधव दरक का मेवाड़ मंचीय कलमकार संघ द्वारा पुर-भीलवाड़ा में सम्मान किया गया। सम्मान स्वरूप एक लाख ग्यारह हजार नकद, प्रशस्ति पत्र, शॉल एवं नारियल भेंट किया गया। समारोह में क्षेत्र एवं बाहर के करीब 50 से अधिक कलमकार कविगण उपस्थित थे।

इसी प्रकार निर्मल ग्राम पिपलांत्री एवं ग्राम पंचायत द्वारा कवि दरक के नागरिक अभिनन्दन में सम्मान स्वरूप इकतीस हजार रूपये, प्रशस्ति पत्र, शॉल भेंट की गई। कवि माधव दरक का हैदराबाद (तेलगांना) माहेश्वरी समाज द्वारा प्रशस्ति पत्र, नकद राशि, शॉल एवं श्रीफल भेंट कर सम्मान किया गया। इसी तरह हैदराबाद में मोर्निंग क्लब एक सॉज का साथी संस्था द्वारा भी सम्मान किया गया।

जसुबाई नहीं रहीं

उदयपुर (का. सं.)। कानोड़ निवासी जसुबाई उदावत का 15 मई को 97 वर्ष की उम्र में निधन हो गया। उनके सुपुत्र डॉ. कनक उदावत ने बताया कि वे कुछ समय से उम्र के लिहाज से कमजोर चल रही थीं।

मेवाड़ की शिक्षा नगरी के रूप में कानोड़ अच्छी पहचान लिए है। यहां प्रारम्भ से ही जनजागृति का शानदार माहौल रहा। इस छोटे से गांव में तेरह स्वतंत्रता सेनानी हुए। इनमें से बारह जैन समाज से सम्बन्धित थे। डॉ. कनक के बासा सुखलालजी तथा पिता जवाहरलालजी दोनों स्वतंत्रता सेनानी थे। जसुबाई स्वतंत्रता सेनानियों के पत्नी-समुदाय की अंतिम महिला थीं।

कोरोना: बुजुर्गों पर भी ध्यान दें

-डॉ. वेदप्रताप वैदिक-

आज सुबह-सुबह दो ऐसे बुजुर्ग साथियों के फोन आ गए, जिनकी आयु 80 और 90 के बीच है। उन्होंने कहा कि आप दुनिया के हर मसले पर लिख रहे हैं लेकिन हम बूढ़ों की दुर्दशा पर किसी का ध्यान ही नहीं है। मैं उनके बारे में सोचने लगा, इतने में ही अखबारों का बंडल आ गया। उनमें कई मार्मिक खबरों पर नज़र गई लेकिन मुंबई की एक खबर ने मेरे मित्रों की बात पर मुहर लगा दी।

वह खबर यह है कि मुंबई के प्रसिद्ध मजदूर नेता दत्ता सामंत के बड़े भाई पुरुषोत्तम सामंत ने आत्महत्या कर ली। उनकी उम्र 92 वर्ष थी। वे भी मजदूर-नेता थे। उन्होंने अपने बनाए फंदे पर लटकने के पहले जो अपना मृत्युनामा छोड़ा, उसमें साफ-साफ लिखा कि वे कोरोना-संकट से इतने त्रस्त हो गए हैं कि अब वे जीवन का अंत कर रहे हैं। वे कोरोना से नहीं, उसके संकट से त्रस्त थे।

कौन सहृदय व्यक्ति इस संकट से त्रस्त नहीं होगा? पता नहीं कितने लोग रोज आत्महत्या कर रहे हैं? कितने लोग सैकड़ों मील पैदल चलते-चलते रास्तों में दम तोड़ रहे हैं? कितने लोग भूख और प्यास से तड़फ-तड़फकर मर रहे हैं? कितने ही लोग मजबूरन फलों और सब्जियों के ठेलों को लूट रहे हैं? कितने ही लोग पौराणिक नायक श्रवणकुमार की तरह अपने बुजुर्गों और बच्चों को अपने कंधों और साइकिलों पर ढो रहे हैं। केंद्र और राज्य सरकारें इन सब पीड़ितों की मदद कर रही हैं लेकिन वे वयोवृद्ध लोगों पर विशेष ध्यान दें, यह जरुरी है। कोरोना के सबसे ज्यादा शिकार इसी आयु वर्ग के लोग हो रहे हैं। बुजुर्गों के इलाज की विशेष व्यवस्था होनी चाहिए।

प्रचार-माध्यमों के द्वारा बताया जाना चाहिए कि अमुक मोहल्ले के बुजुर्ग को अमुक अस्पताल में ले जाया जाना चाहिए। अनेक शारीरिक क्षीणताओं के साथ-साथ उनका अकेलापन उन्हें खाए जा रहा है। क्या ही अच्छा हो कि वे भजन-संगीत सुनें। महापुरुषों की रोचक जीवनियां पढ़ें। घर में बच्चे हों तो उनके साथ घरेलू खेल खेलें। उन्हें सुबह-सुबह बगीचों में सैर करने, हल्के व्यायाम और आसन करने और शारीरिक दूरी का ध्यान रखते हुए लोगों से मिलने-जुलने और बातों से दिल हल्का करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए।

सरकारें इसका उलटा कर रही हैं। सरकारें उन्हें कुछ गुजारा-भत्ता भी दें तो अच्छा रहे। ज्यादातर बुजुर्ग ऐसे हैं, जिन्हें कोई पेंशन नहीं मिलती। कुछ 90 साल से ऊपर के बुजुर्गों ने बताया कि उनके घरेलू सेवक अपने गांव भाग गए तो उनके पड़ौसियों ने अपने सेवक उनके लिए भेज दिए। इस संकट के समय कुछ घरों के लोग घर के बुजुर्गों को ही बोझा मानने लगे हैं। ऐसी विकट स्थिति में सरकार क्या कर सकती है? बेहतर तो यह है कि यार-दोस्त, रिश्तेदार और अड़ौसी-पड़ौसी ही अपना फर्ज निभाएं।

स्मृतियों के शिखर (100) : डॉ. महेन्द्र भानावत

राणा प्रताप ने उदयपुर से पूर्व देवपुर बसाया

बात हल्दीघाटी युद्ध की है। यह सन् 1576 में हुआ था। इधर हल्दीघाटी का रण मचा हुआ था और उधर अकबर की एक टुकड़ी को कुंभलगढ़ भेज दिया गया। उस समय वहां पर किलेदार आशाशाह देवपुरा था जो बहुत बूढ़ा हो चुका था। उसका भतीजा डूंगरसिंह था।

दोनों बड़े बहादुर, जोशीले और अपने कर्तव्य के प्रति मर मिटने वाले थे। किले का मुख्य दरवाजा लोहे के तीखे भालों से युक्त, बड़ी मजबूती लिए था। शाही हाथी बार-बार उनसे टकराकर लहूलुहान हो गया था। अकबर के सैनिकों के आगे अपने दमखम को सवाया मानते हुए दोनों वीर अपने हाथों में लपलपाती तलवारें लिए दरवाजे के ऊपर से उतरकर नीचे आए और जोरदार भिड़न्त की।

आशाशाह वंश के अक्षयसिंह देवपुरा ने बताया कि यह भिड़न्त इतनी जोरदार थी कि शाही हाथी का एक दांत उखाड़ दिया और सूंड कटकर दूर जा गिरी। इससे हाथी आगे नहीं बढ़ सका और पाछपगा (पीछे) खिसकने लगा जिससे उसने अपने ही सेना के जांबाजों को बुरी तरह कुचल दिया। इस घटना की साख देता देवपुराजी ने 23 फरवरी 2004 को अपने निवास रावजी का हाटा, उदयपुर में मुझे यह छंद सुनाया जो उन्हें उनके बहीभाट (पोथी वाचक) से सुनने को मिला-

गजदंत उखाड़ण देपुरा, हाथ लिया शमशीर।
जो डूंगरसी पाछो फरे, लाजे कुंभलमीर॥

भावार्थ- अकबर के शाही हाथी के दांत उखाड़ने के लिए वीरवर आशाशाह देपुरा ने अपने हाथ में तलवार उठाई। रणबाज डूंगरसिंह भी कम जोशीला नहीं था। यदि वह इस युद्ध से मुंह मोड़ लेता तो कुंभलगढ़ को लज्जित कर देता।

देवपुरा अक्षयसिंह ने बताया कि पोथी भाट जब भी आता है, इस छंद के अतिरिक्त निम्नांकित तीन और छंदों से शुभराज करता है। ये छंद हैं-

आशाशाह न हुवतो, देपुरो दीवांण।
रांण उदय हो तो नहिं, हुतो न पातळ रांण॥

अर्थात्- यदि आशाशाह देवपुरा दीवानगी धारण नहीं करता तो उदयसिंह नहीं होता और यदि उदयसिंह नहीं होता तो राणा प्रताप नहीं होता।

हिंदुपत री आंण, राखी रांण प्रतापसी।
ता पितु उदया रांण, रखीयो आशा देपुरा॥

अर्थात्- राणा प्रताप ने हिंदूपत की आन रख उसे अकबर के अधीन होने से बचाया। उसके पिता राणा उदयसिंह का आशाशाह देवपुरा ने मान बनाये रखा।

पन्नाधाय न होती तो उदयसिंह न बचता।
आशाशाह देपुरा न होता तो उदयसिंह रांण न बनता।।

अर्थात्- पन्नाधाय यदि नहीं होती तो उदयसिंह जीवित नहीं बचता। आशाशाह देवपुरा यदि नहीं होता तो उदयसिंह राणा नहीं बनता।

उन्होंने बताया कि महाराणा उदयसिंह नहीं होता तो महाराणा प्रताप न होता और यदि महाराणा प्रताप न होता तो हिन्दुत्व न बचता।।

आशाशाह की 13 वीं पीढ़ी के वंशधर एडवोकेट अक्षयसिंह देवपुरा ने बताया कि आशाशाह के बाद क्रमशः श्रीपत, दामा (श्रीपत का पांचवा पुत्र), रघुनाथ, रेखचंद, परसराम, भवानीदान, दौलतराम, नारायणदास, जयकिशन, शालग्राम, रूपचंद तथा हरखलाल हुए।

अक्षयसिंह देवपुरा

राणा प्रताप जानते थे कि आशाशाह की बुद्धिमत्ता, त्याग एवं समर्पण से ही मेवाड़ राजघराने की सुरक्षा एवं संरक्षण हुआ।

इस एहसान से उऋण होने के लिए उन्होंने उदयपुर का प्रथम नाम देवपुर रखा किंतु बाद में सरदारों की राय से उन्होंने यह नाम बदलकर अपने पिता उदयसिंह के नाम पर उदयपुर कर दिया। आशाशाह के निरीक्षण में ही उदयपुर की बसावट शुरू हुई।

अक्षयसिंह देवपुरा का रहन-सहन अत्यन्त सादगी लिये था। वे मेवाड़ी परम्परा के प्रतिनिधि के रूप में अपनी खास पहचान रखते थे। सिर पर मेवाड़ी पगड़ी, धोती और कोट पहने रहते थे। उनके सुपुत्र भगवतसिंह भी एडवोकेट रहे। भगवतसिंहजी के सुपुत्र नरेन्द्रजी भी उसी पुष्ट परम्परा के एडवोकेट हैं। उन्होंने बताया कि दादाश्री अक्षयसिंहजी का जन्म 09 मई 1918 को और निधन 29 नवम्बर 2016 को हुआ। कपासन से जो पोथीवाचक बड़वाजी आते उनका नाम चौथरामजी था।

मीरां के पति भोजराज पक्के शिवभक्त थे। अपने जीवनकाल में उन्होंने कई शिवलिंग स्थापित किये। उनकी मृत्यु के पश्चात उनके द्वारा रक्षित एक चौमुखी लिंग महाराणा प्रताप ने कैलाशपुरी नामक गांव में स्थापित कराया जो एकलिंगजी के मन्दिर के नाम से जाना जाता है। प्रताप द्वारा निर्मित यह पहला मन्दिर है।

लिंग स्थापना के बाद प्रताप ने एकलिंगनाथ को अपना राज अर्पण कर उनकी दीवानी धारण की। यह दीवानी पहले नहीं थी। शिव की पूजा तो थी। प्रताप को जब सब ओर से दुश्मनों ने घेर लिया तब सरदारों को एकत्र कर एकलिंगनाथ के श्रीचरणों में उन्होंने अपना राजपाट अर्पित कर दिया।

कहा- 'यो राज आपरो है सो आप ही संभाळो। म्हूं तो आपरो दीवाण बण आपरी सेवा-पूजा करतोरूंगा। आप ही मालिक हो।' अर्थात् ये राज्य आपका है सो आप ही संभालो। मैं तो आपका दीवान बनकर आपकी सेवा-पूजा करूंगा। आप ही स्वामी हो।

शिवलिंग की यह स्थापना प्रताप ने उदयपुर बसाने के बाद की। वे अपनी राजधानी ऐसी जगह स्थापित करना चाहते थे जो चारों ओर से सुरक्षित हो।

त्रिपोलिया के यहां की गहरी खाई को पाटकर महल बनवाये और चित्तौड़ के जीवों को लाकर बसाया। महल के पिछवाड़े तालाब बंधवाया जिसका 'पीछोला' नाम दिया। बाद में राणा अमरसिंह ने कुछ और महल बनवाये। खास विस्तार तो अंग्रेजों के समय हुआ। [1]

आशाशाह देवपुरा महाराणा सांगा का दीवान था। वह केलवाड़ा का रहने वाला था और कुंभलगढ़ का किलेदार था। वह बड़ा बहादुर, दिलेर एवं हौसलेबाज था। इसी की व्यूह रचना में पन्नाधाय बालक उदयसिंह को लेकर डूंगरपुर और फिर प्रतापगढ़ पंहुची किन्तु बणवीर के आंतक के कारण किसी ने उसे पनाह नहीं दी।

पन्ना जैसी उत्कृष्ट एवं वफादार तथा विश्वसनीय धाय मां दूसरी नहीं हुई। उसने कुंभलगढ़ में बारह वर्ष तक उदयसिंह को पालापोषा। इस समय चित्तौड़ पर बणवीर राज्य कर रहा था। यह दासी-पुत्र था।

मेवाड़ के सरदारों एवं जागीरदारों में यह सर्वमान्य राणा नहीं था। पन्ना के साथ एक वारी तथा एक नाई था। अन्त में पन्ना पुनः केलवाड़ा लौटी और आशाशाह के वहीं उदयसिंह को लिए चार वर्ष अज्ञातवास व्यतीत किया। पन्ना धाय गूजर जाति की थी जो राजसमंद जिले के कपासन क्षेत्र की रहने वाली थी। इधर बणवीर ने सब ओर उदयसिंह की मृत्यु की खबर फैलादी।

राज-परिवारों में पुत्रों का लालन-पालन धाय के जिम्मे रहता आया है। धाय ही अपना दूध पिला उसे पालती-पोषती। दूध धवाने (पिलाने) के कारण ही वह महिला धाय कहलाती। उसे धाय मां के रूप में माता का महत्त्वपूर्ण दर्जा दिया जाता।

उदयसिंह बणवीर के रास्ते का कांटा था। वह जानता था कि उदयसिंह ही राजपाट का असली हकदार है। अतः समय रहते उसका काम तमाम कर दिया जाय तो सदा के लिए उसका रास्ता साफ हो जाएगा। यह सोच वह कुंभलगढ़ पहुंचा। वह गुस्से में भरा हुआ था। उसकी भुजाएं कांप रही थी और तलवार उदयसिंह का संहार करने को लपलपा रही थी।

महल में पहुंचते ही बणवीर ने जोर की दहाड़ मारी। वहां पन्ना बैठी हुई थी। पास ही में उसका लड़का चंदन सोया हुआ था। बणवीर ने पन्ना से गर्जना भरी आवाज में पूछा- 'कहां है मेरे रास्ते का कांटा उदयसिंह? मैं अभी उसका काम तमाम कर बता देना चाहता हूं कि मैं ही इस राज्य का एक छत्र राणा हूं।'

यह सुनते ही पन्ना हड़बड़ा उठी। उसने सोचा यदि उदयसिंह को बता दिया तो सदा के लिए हिन्दुआ सूरज अस्त हो जाएगा। अतः पास में सोये अपने पुत्र की ओर इशारा किया। बणवीर ने आव देखा न ताव, उसी पर अपनी तलवार का वार कर एक ही झटके में उसका काम तमाम कर दिया।

पन्ना बड़ी दिलेर और बहादुर महिला थी। उसे अपने पुत्र की मृत्यु का उतना अफसोस नहीं था जितनी अपने प्राणों से प्रिय हिन्दुआ सूर्य राजकुमार उदयसिंह को बचाये जाने की खुशी थी। उसकी चिंता यह थी कि किसी तरह उदयसिंह तो बचा लिये गये मगर अन्य किसी को इस भेद की भनक तक न लगे।

एक समय आशाशाह ने अपने लड़के का विवाह रचाया। इसका निमंत्रण मेड़ता के राव अक्षयराज सोनगरा को भी भेजा। अक्षयराज इस विवाह में स्वयं तो उपस्थित नहीं हो सका किन्तु एक चारण को भेजा।

अक्षयसिंहजी के अनुसार भोज में पकवानों की परोसकारी का जिम्मा अलग-अलग कुंवरों को सौंप रखा था। परोसकारी के समय एक कुंवर ने दूसरे कुंवर से परोसकारी का बर्तन छीन लिया और जोर की थप्पड़ मारदी।

चारण यह हाल देख रहा था। उसे थप्पड़ मारने वाला कुंवर अन्य सभी कुंवरों से डीलडौल, चालढ़ाल तथा बलथल में सवाया और किसी बनिये का पुत्र नहीं होकर राजपूत का बालक लग रहा था।

चारण से रहा नहीं गया। उसने आशाशाह से उस कुंवर बाबत पूछा । आशाशाह ने चारण को अपना विश्वस्त जान अन्दर का सारा भेद बता दिया और कहा कि यह कुंवर उदयसिंह है।

इस पर चारण बोला कि मैं इसका विवाह मेड़ता राव अक्षयराज सोनगरा की बालकी जयन्ताबाई से करवा दूंगा।

चारण ने मेड़ता पहुंच अक्षयराज को सारी घटना कह सुनाई। अक्षयराज के लिए इससे बढ़िया प्रस्ताव और क्या हो सकता था कि यदि उसकी कुंवरी उदयसिंह से ब्याही जाती है तो वह मेवाड़ की महारानी बनेगी।

आशाशाह भी चाहता था कि इस विवाह से उसे अक्षयराज से बड़ा संबल मिलेगा जिससे वह बणवीर का प्रभुत्व क्षीण कर सकेगा। यही हुआ। बणवीर को गद्दी से उतार उदयसिंह (16) को राजगद्दी पर बिठाया गया।

प्रताप इसी जयन्ताबाई का पुत्र था जो उदयसिंह के बाद मेवाड़ का महाराणा बना। महाराणा बनने के बाद उदयसिंह ने उस चारण को राजसमंद जिले का मेंगटिया गांव जागीर में दिया।

इसी चारण वंश में ईश्वरदान आशिया हुए जिन्होंने केसरीसिंह बारहट की बड़ी पुत्री चन्द्रमणि से विवाह किया।

कोटा के बारहट राजेन्द्रसिंह (92) ने बताया कि चन्द्रमणिदेवी उनकी बुआ थी। बारहट केसरीसिंह, उनके भाई जोरावरसिंह और पुत्र प्रतापसिंह के साथ ईश्वरदान भी क्रांतिकारियों की अग्रिम पंक्ति में थे। तीनों बारहट वीर- शिरोमणियों के साथ ईश्वरदान भी जेल में रहे। उदयपुर में ईश्वरदानजी से मेरी कईबार भेंट हुई। वे बड़े साहित्यप्रेमी और प्राचीन डिंगल काव्यधारा के गंभीर अध्येता थे।

केसरीसिंह बारहट के साथ वे गांधी आश्रम, वर्धा में महात्मा गांधी के संपर्क में भी आये। उन्होंने पिलानी के बिड़ला शोध संस्थान में भी काम किया। चारण पत्रिका का संपादन भी किया और आजीवन खादी पहनी। राजेन्द्रसिंहजी ने भारतीय लोककला मण्डल, उदयपुर में अपनी सेवाएं दीं तब मैं भी उनके साथ खोज विभाग में था।

- शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन

उदयपुर, सोमवार 01 जून 2020

सम्पादकीय

कोरोना में ये करो ना, वो करो ना

कोरोना की आपदा का शुरू-शुरू में तो बड़ा संकट झेलना पड़ा पर धीरे-धीरे सब कुछ अनिवार्य-सहज हो गया। हमारी गली में भी 'करे कोई भरे कोई' सो लोकडाउन लग गया। आवागमन पूर्णत: बन्द। शुरूआत में तो बाहर की और भीतर की गायें और उसके बछड़े तक बिंबियाते रहे पर चलो अभ्यस्त हो गये।

लोकडाउन खुल गया तो कुछ ने कानाफूंसी की, नहीं खुलता तो कुछ दिन और ठीक रहता। कारण बताया कि जाते-आते हर व्यक्ति कचरे की थैली फैंक जाता, अब बिलकुल सफाई रहने लगी है।

दूसरे ने सफाई दी, आसपास के पेड़ वर्षों से अधिक हरे दिखाई दे रहे हैं। टींटोड़ी, तोते, कबूतर मनचाहे फर्राटे से गगनगामी बन रहे हैं। पहलीबार पता चला कि जिसको रामजी का घोड़ा कहते वह कभी-क आता लेकिन इस बार कोरोना से भी अधिक आफत वाला आक्रांताओं की फौज की तरह आया।

घरों में सब ओनलाईन काम शुरू हो गया है। पहले खतों द्वारा कुशलक्षेम पूछते थे, वह बन्द हुआ और मोबाईल टेलीफूल द्वारा टॉक शुरू हुई। अब घर बैठे जिससे चाहो बच्चे, पोते-पोती रू-ब-रू बात करा देते हैं। वे सब कुछ बताते हैं, रसोई, बेडरूम, मेहंदी रचे हाथ, सिंगारदान, हाथ की बनी नमकीन, मिठाई, पहली बार बढ़े हुए बाल, दाढ़ी-मूंछ और बेतरतीबी अस्त-व्यस्तता।

एक दोस्त ने बधाई ठोक दी। कारण पूछा गया तो बोला, कैसा लग रहा है लोकडाउन का खुलना। उत्तर स्वाभाविक था, बाहर निकलने की इच्छा नहीं हो रही है। लग रहा है किसी दूसरी जगह हैं। सब साइलेंट।

उसने बताया प्रारम्भ में जब कोरोना ने दस्तक दी तो बड़े तगड़े बन्धन थे। अब यह बुरी तरह फैल रहा है तो सुविधा-छूटें अधिक मिल रहा हैं। अब लोकडाउन-5 है तो निकलो मगर सावधानी रखो।

जो मास घर में बन्द था, अब पानी के ओटे की तरह मुक्त हो गया है मगर मास्क की मर्यादा जरूरी है। दो गज दूरी बनाये रखनी है और हाथ की सफाई के लिए हाथों को बार-बार धोना है। यह सब करते रहना है तो कोरोना का कोई रोना है न धोना है।

कोरोना कर्मवीरों को 'अमृतधारा' से बचाव

उदयपुर (विज्ञप्ति)। जिले में कोरोना बचाव के लिए जहां आमजनों को विभिन्न एहतियाती उपाय अपनाने के लिए जागरूकता पैदा की जा रही है वहीं दिन-रात फिल्ड में रहकर कोरोना पीड़ितों को स्वस्थ करने के लिए

आयुर्वेद विभाग आगे आया है। जिला कलक्टर श्रीमती आनंदी ने इसके लिए अनुमति देते हुए विस्तृत दिशा-निर्देश देकर अमृतधारा वितरण की कार्यवाही करने को कहा है। विभाग के वरिष्ठ आयुर्वेद चिकित्साधिकारी डॉ. शोभालाल औदिच्य ने बताया कि अमृतधारा गोलियों के 9 हजार पैकेट्स को तैयार करने का कार्य जारी है। यह गोली कोरोना कर्मवीरों को गर्मी, लू, उल्टी, दस्त एवं हैजा आदि से बचाने के लिए दी जा रही है। अमृतधारा गोली चिकित्साकर्मी, पुलिस प्रशासन, पैरा मेडिकल स्टाफ, शिक्षक, आशा सहयोगिनी, विद्युत विभाग, सफाईकर्मियों आदि उन कर्मवीरों के लिए है जो कोरोना को मात देने के लिए विविध सेवा कार्यों में नियोजित हैं।

हाईकोर्ट बैंच के लिए 38 वर्ष से प्रयासरत : चपलोत

विगत 38 वर्षों से उदयपुर में चल रहे हाईकोर्ट बैंच की स्थापना के आन्दोलन पर स्थापित मेवाड़-वागड़ हाईकोर्ट बैंच संघर्ष समिति के पूर्व अध्यक्ष एडवोकेट शान्तिलाल चपलोत से डॉ. तुक्तक भानावत की बातचीत के प्रमुख अंश-

भानावत : उदयपुर में हाईकोर्ट बैंच का प्रस्ताव कबसे चल रहा है ?

चपलोत : उदयपुर में हाईकोर्ट बैंच का आन्दोलन उदयपुर संभाग के एडवोकेट्स की 1982 में हुई कॉन्फ्रेंस से शुरू हुआ जो पूरे संभाग में चल रहा है।

भा. : तब से इस आन्दोलन में आप किन-किन की भूमिका महत्त्वपूर्ण मानते हैं ?

च. : उदयपुर संभाग के सभी एडवोकेट्स की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। उदयुपर के सभी राजनैतिक दलों ने भी इसको पूर्ण समर्थन दिया है।

भा. : बाधा कहां आ रही है ?

च. : उदयपुर बन्द भी कई बार हो चुका है। सन् 1998 में कोर्ट परिसर में 91 दिन की हड़ताल रही। यह प्रयास कभी शिथिल नहीं हुआ। अभी भी वही उबाल और आशा-उम्मीद है।

भा. : स्थानीय सांसद-विधायक की भूमिका को आप कैसे लेते हैं ?

च. : उदयपुर के सांसद एवं विधायक रहे सभी व्यक्तियों ने अपना पूर्ण योगदान दिया। दिल्ली में केन्द्र में जब विधिमंत्री वीरप्पा मोइली थे तब 2009 में उन्होंने राजस्थान सरकार को पत्र लिखा कि उदयपुर में हाईकोर्ट बैंच की स्थापना की जा सकती है। राजस्थान सरकार अपनी अनुशंसा भेजे पर माननीय मुख्यमंत्री अशोकजी गहलोत ने नहीं भेजी। तदनन्तर मुख्यमंत्री वसुन्धराजी राजे बार एसोसिएशन उदयपुर में तशरीफ लाईं तब उन्होंने भी आश्वस्त किया था पर यह मांग पूरी नहीं हो पाई।

भा. : इतने ज्ञापन, धरने तथा काम बंद के बावजूद सफलता नहीं मिलने को कैसे मानते हैं ?

च. : बाधा राज्य सरकार की ओर से केन्द्र सरकार को अपनी अनुशंसा भेजने की आ रही है। गहलोत साहब पूर्व में भी कह चुके हैं कि आपकी मांग जायज है। मैं जोधपुर से हूं। जोधपुर के एडवोकेट प्रतिमाह की अन्तिम तारीख को जयपुर में 1977 में जो हाईकोर्ट बैंच खुली, उसके खिलाफ हड़ताल रखते हैं।

भा. : ऐसे में संभावना कम लगती है।

च. : वर्ष 2017 में हाईकोर्ट बैंच की मांग को लेकर हमने बिना कार्य बन्द किये 16 मार्च से लगातार धरना चलाया। उसे सारे संभाग में अपूर्व सफलता मिली। 16 मई 2017 में आमरण अनशन भी किया। परिणामस्वरूप तत्कालीन मुख्यमंत्री वसुन्धराजी ने उदयपुर से एडवोकेट्स का एक प्रतिनिधि मंडल 19 मई को जयपुर में मिलने के लिए बुलाया।

इस प्रतिनिध मण्डल में उदयपुर से शान्तिलाल पामेचा, रमेश नंदवाना, सत्येन्द्रपालसिंह छाबड़ा, भरत वैष्णव, भीलवाड़ा से सुरेश श्रीमाली, चित्तौड़ से कन्हैयालाल श्रीमाली और मैं कुल 11 प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। ढाई घण्टे चली वार्ता के बाद एक कमेटी का गठन करने का आश्वासन हुआ। तब विधि मंत्री, विधि सचिव, संभागीय आयुक्त, संभागीय पुलिस के आईजी मिलकर दो माह में रिपोर्ट प्रस्तुत करने का आदेश हुआ।

भा. : सकारात्मक परिणाम हाथ नहीं लगने पर भी आन्दोलन चलाते रहने का कोई तुक ?

च. : दिल्ली में लोकसभा सांसद अर्जुनजी मीणा, चित्तौड़ सांसद सी. पी. जोशी ने इस मुद्दे को कई बार उठाया है। उदयपुर से एक प्रतिनिधि मण्डल केन्द्र सरकार से मिलने नई दिल्ली गया था। विधि मंत्रीजी से मिलना तय था पर सुषमा स्वराज का देहावसान हो जाने से लोकसभा स्थगित हो गई। प्रतिनिधि मण्डल से विधि मंत्री की भेंट नहीं हो पाई।

भा. : और कुछ कहना चाहेंगे ?

च. : उदयपुर में जब भी आन्दोलन होता है तो बीकानेर, कोटा, जोधपुर में भी हो जाता है। सभी सरकारें चाहती हैं कि गरीब को सस्ता सुलभ न्याय मिले। उदयपुर संभाग ट्राइबल एरिया है। वह संविधान के शिड्यूल से गवर्न होता है। राजस्थान का 80 प्रतिशत ट्राइब उदयपुर संभाग में है। अनुसूचित जनजाति व अनुसूचित जाति के लोग ही सबसे ज्यादा वंचित हैं।

संघर्ष हमारी सतत प्रक्रिया है। सारी जनता इस आन्दोलन के बारे में जानती है कि उदयपुर क्षेत्र ट्राइबल एरिया है और लोगों की मांग उचित है। आन्दोलन नहीं हुआ होता तो हाईकोर्ट बैंच की मांग भी नहीं चलती। इस आन्दोलन को सफलता अवश्य मिलेगी। एसोसिएशन, हम सभी एडवोकेट्स व जनता को विश्वास है।

भा. : यह अच्छी बात है कि आप निराश नहीं हैं।

च. : स्वतंत्रता का आन्दोलन महाराणा प्रताप से चलते हुए सन् 1857 में चरम स्थिति में पहुंचा। क्रान्ति के जरिये देश को आजादी नहीं मिल सकी पर सतत् अहिंसात्मक आन्दोलन से अन्तत: 15 अगस्त 1947 को हम आजाद हुए।

भा. : मेरी शुभकामना कि यह आन्दोलन एक दिन रंग लायेगा।

च. : हमारे आन्दोलन को चलते हुए यह 38वां वर्ष चल रहा है। हमें विश्वास है कि हमारी मांग अतिशीघ्र पूरी होगी। हमारा आन्दोलन उदयपुर संभाग की ज्वलंत समस्या को लेकर है। सफलता अवश्य मिलेगी। देर कितनी हो पर अंधेरे नहीं है। राष्ट्रकवि दिनकर की हूंकार भी हमें मालूम है। जयप्रकाश नारायण के आन्दोलन पर उनकी कविता ने पूरे देश में गूंज दी थी जो सफल हुई। वह गूंज थी- 'सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।'

फोटो प्रतियोगिता में डॉ. कमलेश शर्मा प्रथम

उदयपुर (विज्ञप्ति)। वाईल्ड लाईफ फोटोग्राफर एवं जनसंपर्क उपनिदेशक डॉ. कमलेश शर्मा ऑनलाईन फोटो प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर चयनित हुए। प्रतियोगिता में छह राज्यों से 83 वाईल्ड लाईफ फोटोग्राफर्स ने भाग लिया। प्रवासी पक्षियों के संरक्षण और जन जागरूकता के उद्देश्य से वन विभाग अजमेर और पृथ्वीराज फाउंडेशन द्वारा 'ब्यूटी ऑफ बर्ड्स' शीर्षक से आयोजित ऑनलाईन फोटो प्रतियोगिता में डॉ. शर्मा द्वारा क्लिक किया इजीप्शियन वल्चर यानी सफेद गिद्धों की लड़ाई का फोटो प्रथम स्थान पर चयनित किया गया।

अन्य विजेता ओंकारनाथ कल्लप्पा गये (महाराष्ट्र), तार्किक वर्मा एवं प्रवीण भगत (राजस्थान) उर्वशी परमार (गुजरात), देवांशुकुमार रॉय (असम) रहे।

कोरोना से निपटने के लिए करने होंगे साझा सकारात्मक प्रयास : संदीप पुरोहित

- कोरोना ने बदली पत्रकारिता की दशा और दिशा -

उदयपुर, (का. सं.)। कोविड-19 वैश्विक महामारी के इस दौर में जहां पूरी दुनिया पूरी तेजी के साथ बदल रही है, ऐसे में पत्रकारिता का पेशा, उसका स्वरूप और खुद पत्रकारों का जीवन भी बदल रहा है।

अनिश्चितता के दौर में कई चुनौतियों का सामना करते हुए हमें कॉमन डायस्पोरा पर आइडिया शेयरिंग करते हुए जनता की परेशानियों के समाधान की दिशा में साझा सकारात्मक प्रयास करने होंगे। यह विचार राज्य के पहले मीडिया वेबिनार में राजस्थान पत्रिका उदयपुर के संपादक संदीप पुरोहित ने व्यक्त किए।

जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (जार) उदयपुर के अध्यक्ष एवं पीटीआई

संवाददाता डॉ. तुक्तक भानावत ने बताया कि इस वेबिनार में विभिन्न मीडिया संस्थानों से जुड़े तथा स्वतंत्र पत्रकारिता करने वाले मीडियाकर्मियों ने 'रोल ऑफ मीडिया इन दिस पेंडेमिक एरा ऑफ कोविड-19' विषय पर विचार साझा किए।

संयोजक अल्पेश लोढ़ा ने बताया कि जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन ऑफ राजस्थान के सपोर्ट से आयोजित पत्रकारिता पर यह देश का पहला वेबिनार था। इस प्रकार के आयोजनों से पत्रकारिता को नई दिशा व ऊर्जा मिलती है।

संदीप पुरोहित ने कहा कि पत्रकारों में आपस में अपने अच्छे काम का कॉमन प्लेटफार्म पर आदान-प्रदान होगा तो अच्छे आइडियाज जनरेट होंगे व उससे सशक्त-सकारात्मक पत्रकारिता सामने आएगी।

हमारा फोकस उदयपुर की जनता होनी चाहिए। जनता की परेशानियां कैसे व किन खबरों के माध्यम से दूर हों व उसमें हम प्रशासनिक मशीनरी को किस तरह से मिलकर दिशा दिखा सकें इस पर काम करना होगा। स्किल एडवांसमेंट पर सतत प्रयास करने होंगे। सब मिलकर शहर के मुद्दों पर एक साथ फोकस करें तो परिणाम और अधिक बेहतर आ सकते हैं।

उन्होंने सवाल पूछा कि हम कई-कई वर्षों से नेताओं की खबरें छापते-दिखाते आए हैं लेकिन बताइये कि क्या किसी भी नेता ने फोन करके पूछा है कि आप कैसे हैं? ऐसे में हमें मिलकर पत्रकारिता के मूल्यों को बचाते हुए कार्य करना होगा। पत्रकारिता पर संकट कई दौर में आए हैं व हर दौर में उसकी जीत ही हुई है। इस बार भी ऐसा ही होगा।

जय राजस्थान के प्रधान संपादक शैलेश व्यास ने कहा कि हम सबको मिलकर इस पेंडेमिक का मुकाबला करना है व अपनी धारदार पत्रकारिता के माध्यम से सबकी मदद भी करनी है।

अपरान्ह टाइम्स के संपादक प्रदीप मोगरा ने कहा कि किसी भी संकटकाल में मीडिया की भूमिका प्रमुख होती है। कोरोना योद्धाओं के लिए पैकेज घोषित किया गया है मगर पत्रकारों के लिए नहीं, उन्हें भी प्रोत्साहन पैकेज मिलना चाहिए। मीडिया में जो लोग आर्थिक रूप से परेशान हैं, उनकी मदद के लिए भी आगे आएं। छोटे अखबारों में जहां नौकरियां प्रभावित हुई हैं, उनके लिए मिलकर प्रयास करें।

लाइव राजस्थान के चीफ एडिटर प्रकाश शर्मा ने कहा कि प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में पत्रकारों की नौकरी पर संकट आ गया है। इस बारे में भी सोचना चाहिए। इसके अलावा खबरों के प्रस्तुतीकरण में तथ्यों की विश्वसनीयता कायम रखने पर जोर देना चाहिए।

फर्स्ट इंडिया न्यूज के ब्यूरो चीफ डॉ. रवि शर्मा ने कहा कि महामारी का यह दौर अभी चल रहा है व हम अभी किसी निष्कर्ष तक नहीं पहुंच सकते हैं कि आगे क्या होगा? हमारी अपनी सीमाएं हैं व उसमें रहते हुए हम कार्य कर सकते हैं। नई विषय वस्तुओं को नए संदर्भों में समझ कर हम एक-दूसरे को सपोर्ट करते हुए समस्याओं के समाधान करने की कोशिश करें।

राजस्थान पत्रिका के रिपोर्टर जितेन्द्र पालीवाल ने बताया कि इस महामारी से उबरने के बाद जब नई दुनिया में जाएंगे तो कई चीजें बदल जाएंगी। जनता में बहुत बड़ा तबका अब भी ऐसा है जो गलतफहमियों का शिकार है।

नई दुनिया में जीने के नए तौर तरीके, रोजगार का नया ढांचा, विशेषज्ञता के नए आयाम आदि में हमें खुद को ढलना होगा। इस वक्त हम विशेषज्ञों की मदद लेकर कोरोना महामारी के विविध पक्षों को जनता के समक्ष रखें, सरकारों की गलत नीतियों के खिलाफ दबाव बनाने की कोशिश करें, खुलकर बोलें।

न्यूज-18 राजस्थान के सीनियर रिपोर्टर कपिल श्रीमाली ने कहा कि अभी कोरोना का मिड टर्म चल रहा है। हायर सिचुएशन जल्द ही देखने को मिल सकती है। हमको इस बीमारी के साथ ही जीने की आदत डालनी पड़ेगी। खुद प्रिकोशन रखें, अवेयर रहें, नई तकनीक से जुड़ें।

जी राजस्थान न्यूज के रिपोर्टर अविनाश जगनावत ने कहा कि अब हमें हमारे जीवन में बदलाव लाने हैं। जो लोग पॉजिटिव से निगेटिव हो रहे हैं, सोसायटी के लोगों का उनके प्रति व्यवहार बदल रहा है। हमें अपनी खबरों के माध्यम से इस तरह की जानकारी लोगों तक पहुंचानी है कि कोरोना से लड़कर जीते लोगों के प्रति सोसायटी का रवैया सकारात्मक व उत्सावर्धक हो।

एटीएन न्यूज के सीनियर रिपोर्टर प्रमोद गौड़ ने कहा कि हम पत्रकारों को कोविड के साथ कैसे जीना है, यह महत्वपूर्ण बात है। पत्रकार को खुद कार्यक्षेत्र में सावधानी बरतनी होगी। लोगों को अवेयर करें व खुद भी सतर्क रहें। मेरा भी मानना है कि लोगों में ज्यादा से ज्यादा जागरूकता लाने के प्रयास हों ताकि वे बीमारी के साथ ही सामान्य जीवन जीना सीख सकें।

ईटीवी भारत के उदयपुर ब्यूरो प्रमुख स्मित पालीवाल ने कहा कि देश में बहुत से पत्रकार पॉजिटिव आ रहे हैं हमें समझना होगा कि हमें फील्ड में कैसे खुद को सुरक्षित रखते हुए काम करना है। छंटनी का दौर सब तरफ चल रहा है, इसका सबसे बड़ा असर मीडिया पर होगा। सबको मिलकर ऐसा प्लान करना चाहिए कि आने वाले बुरे वक्त में सभी मीडियाकर्मी एक दूसरे के सुख-दुख व आर्थिक सुरक्षा के साथी बनें।

एनडीटीवी के स्ट्रींगर संजय व्यास ने कहा कि हमें वैकल्पिक चिकित्सा पद्धतियों को भी प्रोत्साहित करना चाहिए तथा खुद भी अपने स्तर पर जितने भी हो सके, सामाजिक सेवा के कार्य यथाशक्ति करने चाहिए।

स्वतंत्र पत्रकार क्लॉड डिसूजा ने कहा कि पैनिक व अवेयरनेस के बीच में विभेद करना जरूरी है। कई बार हम न्यूज रिपोर्टिंग में पैनिक का कंटेंट ज्यादा डाल देते हैं, इससे बचना चाहिए। कोविड की अवेयरनेस तो अपनी तरह से चलती रहेगी मगर हमें यह तय करना है कि लोगों का मानसिक स्वास्थ्य अपनी खबरों के माध्यम से कैसे ठीक कर सकते हैं।

दुनियाभर में कोविड-19 से हो रही मौतों के आंकड़ों को इस तरीके से भी समझाया जा सकता है कि इससे ज्यादा मौतें तो डायरिया व एक्सीडेंट से हो जाती है। ऐसे में चिंता की कोई बात नहीं है। दरअसल ये हमारा जिम्मा है कि हम पॉजिटिविटी की लहर समाज में पैदा करें। साथ ही आने वाले कठिन वक्त में सेवा कार्यों पर ज्यादा फोकस करें।

वरिष्ठ पत्रकार डॉ. विकास बोकड़िया ने कहा कि मास कम्युनिकेशन का दौर मास्क कम्युनिकेशन में आ पहुंचा है। हायर और फायर के जमाने में पत्रकारिता को बचाना है तो डेटा कलेक्शन, इंटप्रिटेशन व डेटा शेयरिंग पर ज्यादा जोर देना होगा। कोरोना को लेकर दुनियाभर में कई रिसर्च चल रहे हैं। कई नई गाइडलाइंस बन रही हैं। पत्रकारिता का यह कर्तव्य है कि उसका सरलतम रूप जनता को बताएं ताकि वो बीमारी के साथ जीना सीख सकें।

धन्यवाद दैनिक पुकार के अजय आचार्य ने दिया। इस अवसर पर सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के उप निदेशक डॉ. कमलेश शर्मा, राष्ट्रदूत के न्यूज एडिटर रफीक एम. पठान, जय राजस्थान के न्यूज एडिटर भूपेन्द्र चौबीसा, उदयपुर एक्सप्रेस के सब एडिटर पवन खाब्या, वरिष्ठ पत्रकार मुकेश मूंदड़ा आदि मौजूद थे।

स्तन कैंसर का सफल इलाज

उदयपुर (का. सं.)। कोरोना महामारी के दौरान गीतांजली कैंसर सेंटर में महामारी के दौरान डॉक्टर्स द्वारा पूरी कोशिश की जा रही है कि मरीज़ों के इलाज की अवधि को कम से कम रखकर उनका इलाज किया जाये।

उदयपुर निवासी 68 वर्षीय सुनीता देवी (परिवर्तित नाम) के स्तन में एक छोटी सी गांठ थी। गांठ को लमपेक्टोमी सर्जरी द्वारा निकाला गया। रेडिएशन ओंकोलोगिस्ट डॉ. रमेश पुरोहित द्वारा रोगी की रिपोर्ट्स देखने के पश्चात पाया गया कि रोगी रेडिएशन की उन्नत पद्धति एपीबीआई के लिए एकदम उपयुक्त थी तथा सही समय पर आने पर रोगी का रेडिएशन मात्र एक हफ्ते के भीतर गीतांजली हॉस्पिटल में कोरोना वायरस के सभी प्रशासनसिक व चिकित्सकीय नयाचारों का पालन करते हुए पूर्ण किया गया। इलाज करने वाली टीम में डॉ. रमेश पुरोहित, डॉ. किरण चिगुरुपल्ली, डॉ. मेनाल भण्डारी, डॉ. दीपांजली पटेल, डॉ. अभिषेक अरोड़ा, डॉ. अमित गेरा, शालू पीटर, राजेश आर, प्रीदु व निहास सम्मिलित थे।

राजेन्द्र टोयोटा सर्विस सेंटर पुनः शुरू

उदयपुर (का. सं.)। सरकार द्वारा जारी एडवाइजरी का बारीकी से पालन करते हुए देशव्यापी लॉकडाउन के हफ्तों बाद राजेन्द्र टोयोटो ने पुनः सर्विस सेंटर शुरू कर दिया है। कंपनी ने काम के सभी क्षेत्रों में उन्न त सुरक्षित संचालन के लिए दिशा निर्देशों में कुछ महत्त्वपूर्ण बदलाव भी किए हैं। इन नवीनीकृत दिशा निर्देशों पर सदस्यों को प्रशिक्षित करने के साथ-साथ सुरक्षित सामग्री और काम के माहौल को सुनिश्चित करने पर ध्यान दिया जाएगा ।

हर गाड़ी को सर्विस करने से पूर्व सेनेटाईज़ किया जाएगा तथा सर्विस एड्वाइज़र पी.पी.ई. किट पहन के ही गाड़ी को अटेंड करेगे एवं सर्विस करने के पश्चात गाड़ी की डिलीवरी से पूव भी पुनः सेनेटाईज़ किया जाएगा। अच्छी तरह से प्रशिक्षित टेक्नीशियन की एक पूरी टीम सुनिश्चित करेगी कि हर ग्राहक को टोयोटा के साथ सबसे सुखद और परेशानी मुक्त सर्विस कराने का अनुभव हो। इसी के साथ ग्राहकों की वित्तीय चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए टोयोटा फाइनेंस ने ई.एम.आई हॉलिडे स्कीम की घोषणा की है जिसके तहत गाड़ी खरीदने पर 3 माह बाद ई.एम.आई का भुगतान कर सकते हैं।

ब्रेंन ट्यूमर की सफल सर्जरी

उदयपुर (का. सं.)। पारस जे.के. हॉस्पिटल, में चिकित्सकों ने एक मरीज के ब्रेंन ट्यूमर की सफल सर्जरी कर उसकी आवाज लौटाई है।

न्यूरोसर्जन डॉ. अजीत सिंह ने बताया कि सांचौर निवासी मसराराम (50) पिछले कई दिनों से अपने

बोलने की शक्ति खो चुका था। उसके शरीर को भी लकवा मार गया था। इस कारण उसके दैनिक कार्य करने के लिए भी दूसरों का सहारा लेना पड़ता था।

न्यूरोसर्जन डॉ. अमितेंदु शेखर ने बताया कि इस ट्यूमर की वजह से उसको मिर्गी के दौरे भी आने लगे थे। इस पर परिजनों ने उसे उदयपुर सहित आसपास के कई अस्पतालों में दिखाया। सभी ने ऑपरेषन करवाने की सलाह के साथ ऑपरेशन को रिस्की भी बताया।

परिजन गत दिनों मरीज को पारस जे.के. हॉस्पिटल में लाए। यहां डॉ. अजीत सिंह ने उन्हे ऑपरेशन व उपचार की नई तकनीकों की जानकारी दी। परिजनों की सहमति पर चिकित्सकों ने माईक्रोस्कोप की सहायता से सिर के जटील हिस्सों को बचाते हुए सफल ब्रेंन ट्यूमर की सर्जरी की। वर्तमान में मरीज पूर्ण रुप से स्वस्थ है। ऑपरेशन के कुछ देर पश्चात ही उसकी आवाज़ पुन: आ गई। मरीज चलने फिरने भी लगा है और सभी दैनिक कार्य बिना किसी की मदद के कर रहा है।

राजस्थान विद्यापीठ विवि में सारे शैक्षणिक कार्य ऑनलाईन करने का निर्णय

उदयपुर (का. सं.)। जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डिम्ड टू बी विश्वविद्यालय की अकेडमिक

कौंसिल की आनलाईन बैठक में कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत ने विश्वविद्यालय की सभी प्रक्रिया को ऑनलाईन प्रक्रिया से करने का सर्व सम्मत निर्णय लिया।

शारीरिक शिक्षा संकाय के अन्तर्गत बीए योग शिक्षा, बीपीएड, एक वर्षीय जीम ट्रेनर डिप्लोमा, एग्रीकल्चर संकाय के अन्तर्गत दो वर्षीय एमएससी फिशरिज साईंस, इतिहास विभाग द्वारा भारतीय सभ्यता, संस्कृति संग्रहालय का म्युजियम बनाने का निर्णय किया गया।

इसी तरह पीएचडी धारकों का ऑनलाईन सबमीशन व वॉयवा कराने का निर्णय लेते क्वालिटी रिसर्च पर जोर दिया। बैठक में छात्र-छात्राओं की बकाया परीक्षाओं को भी ऑनलाईन लेने का निर्णय के साथ आगामी सत्र से फार्म भरने से लेकर फीस जमा कराने तक की प्रक्रिया और ऑनलाईन टीचिंग प्रक्रिया को अपनाने का निर्णय किया गया।

ज़िंक की फायर सेफ्टी टीम की सुरक्षा तत्परता

उदयपुर (का. सं.)। पिछले दिनों उदयपुर के निकट रिको एरिया कलड़वास में पेंट फैक्ट्री में आग लगने की घटना में हिन्दुस्तान ज़िंक देबारी की फायर सेफ्टी टीम द्वारा मौके पर पहुंच कर आग की घटना पर काबू पाने के सफल प्रयास को जिला प्रशासन ने सराहा है वहीं हिन्दुस्तान ज़िंक प्रबंधन ने इस टीम के डीसीपओ संजय गालव और फायर मैन ललित मेघवाल और नरेन्द्र मेघवाल की हौंसला अफजाई की है।

इन्होंने स्थानीय प्रशासनिक अग्नि सुरक्षा कार्मिकों और लोगों की मदद से न सिर्फ त्वरित गति से विशाल फैलती आग पर काबू पाया बल्कि आसपास के स्थानों पर फैलने से भी बचाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके इस प्रशंसनीय कार्य की पुलिस प्रशासन एवं फैक्ट्री प्रबंधन ने भी सराहना की। इसी प्रकार हिन्दुस्तान ज़िंक अपने कार्य क्षेत्र के आस पास किसी भी प्रकार की आपदा की स्थिति में जानमाल की सुरक्षा के लिए सदैव तत्पर रहता है। ज़िंक द्वारा अपने संयंत्र और खनन क्षेत्र के परिचालन के निकटस्थ खास कर गर्मियों में खेतों में लगने वाली आग पर काबू पाने में प्रशासन के साथ प्रमुख भूमिका निभा रहा है।

विश्वास मेहता केरल के मुख्य सचिव बने

उदयपुर (का. सं.)। भारतीय प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी डॉ. विश्वास मेहता केरल के मुख्य सचिव बनाये गये। वे 1986 बैच के वरिष्ठ अधिकारी और उदयपुर के वागड़ अंचल डूंगरपुर के मूल निवासी हैं। पूर्व में उदयपुर के पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र के निदेशक रहते उन्होंने संस्कृतिपरक अनेक ऐसे प्रकाशन, सेमीनार, संगोष्ठियां तथा सम्मेलन आयोजित किये जिसके कारण

सांस्कृतिक जगत में उनकी विशिष्ट एवं उल्लेखनीय पहचान बनी।

डॉ. महेन्द्र भानावत द्वारा भी उन्होंने सांस्कृतिक केन्द्र से सम्बद्ध तीन प्रान्तों- राजस्थान, गुजरात तथा महाराष्ट्र के लोकनृत्यों पर पुस्तकें तैयार करा प्रकाशित कराईं। प्रख्यात माण्ड गायिका मांगीबाई की सेवाएं लेकर उनसे और कृष्णकुमार देहलवी से राजस्थानी लोकगीतों का खासा उम्दा संग्रह करा प्रकाशन दिये। अनेक लोककलाकारों की प्रस्तुतियों को पुनर्जीवित और प्रदर्शनधर्मी श्रेष्ठता देने में भी उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही।

प्रो. संजय लोढ़ा सुखाड़िया विवि के डीन बने

उदयपुर (का. सं.)। राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डॉ. संजय लोढ़ा मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के संघटक आर्टस् कॉलेज के डीन बनाये गये। वे सबसे वरिष्ठों में से थे।

06 जुलाई 1960 को जोधपुर में जन्में डॉ. लोढ़ा ने कलकत्ता से ए. ए. और उदयपुर से 1992 में पीएच. डी. की उपाधि ली। उन्होंने अपने निर्देशन में 21 शोधार्थियों को पीएच. डी. कराई और वर्तमान में 10 छात्र शोधरत हैं।

डॉ. लोढ़ा ने अनेक सेमीनारों, संगोष्ठियों एवं सम्मेलनों में उल्लेखनीय भागीदारी द्वारा अपनी विशिष्ट छाप छोड़ी। अनेक ख्यातिलब्ध पत्र-पत्रिकाओं में समसामयिक आर्थिक एवं राजनीतिक विषयों एवं घटनाचक्रों पर उनके लेख चर्चा-विमर्श के प्रसंग बने। उनके लिखे प्रकाशन भी विद्वानों तथा शोध अध्येताओं के लिए उपयोगी सबब बने हैं।

डॉ. कोठारी हरिदेव जोशी विवि एडवाइजरी कौंसिल में

उदयपुर (का. सं.)। हिन्दी एवं राजस्थानी भाषा, साहित्य, इतिहास और जैन दर्शन के प्रसिद्ध विद्वान् डॉ. देव कोठारी हरिदेव जोशी जर्नलिज्म एण्ड मास कम्युनिकेशन विश्वविद्यालय, जयपुर की एडवाइजरी कौंसिल के सदस्य मनोनीत किये गए। डॉ. कोठारी का मनोनयन माननीय राज्यपाल एवं विश्वविद्यालय के चांसलर द्वारा 29 मई को तत्काल प्रभाव से किया गया।

उल्लेखनीय है कि डॉ. कोठारी ने अपने लेखन द्वारा हिन्दी-राजस्थानी के अनेक अल्पज्ञात-अज्ञात तथ्यों को उद्घाटित कर अनेक शोधार्थियों एवं विद्वानों का ध्यान आकर्षित किया। राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी के अध्यक्ष पद पर रहते उन्होंने दीर्घकालीन सेवारत विद्वानों का उच्चस्तरीय सम्मान किया। नव लेखकों को प्रोत्साहन दिया और अनेक प्रवृत्तियों के माध्यम से उन्हें समुचित मंच प्रदान कर उनका गौरव बढ़ाया।

उदयपुर में राजस्थान विद्यापीठ द्वारा संचालित साहित्य संस्थान के निदेशक पद पर रहते उन्होंने अनेक हस्तलिखित ग्रन्थों, पट्टे परवानों, ताम्रपत्रों, डिंगल गीतों, प्राचीन कथावार्ताओं का संग्रह, सम्पादन तथा प्रकाशन करवाया।

शोधपत्रिका के माध्यम से विपुल सामग्री के साथ शोधार्थियों को लेखन की प्रेरणा दी। लाडनूं के जैन विश्वविद्यालय से डॉ. कोठारी ने अपने निर्देशन में कई छात्रों को जैन दर्शन, जैन साहित्य और जैन संस्कृति विषयों पर पीएच. डी. कराई।

शब्द रंजन की ओर से डॉ. मेहता, डॉ. लोढ़ा तथा डॉ. कोठारी को बधाई।

अव्य ने थाईलैंड में जीता पदक

उदयपुर (का. सं.)। झीलों की नगरी के अंतर्राष्ट्रीय स्केटर अव्य अग्रवाल ने देश मे लोकडाउन लागू होने से पहले थाईलैंड में आयोजित स्पर्धा में पदक जीता।

अव्य का श्री राम स्केटिंग क्लब के कोच मनजीतसिंह सहित अन्य द्वारा सम्मान किया गया। गौरतलब है कि प्रतिभाशाली अव्य 4 वर्ष की उम्र से स्केटिंग कर रहे हैं तथा पिछले 10 सालों से उन्होंने कई राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्पर्धाओं में पदक जीते हैं। अपने नाम गिनीज, लिम्का, चिल्ड्रन, ग्लोबल, इंडिया, यंगअचीवर आदि कई रिकार्ड कर उदयपुर का नाम रोशन किया है।

जेके टायर ने इतिहास रचा

उदयपुर (का. सं.)। रेडियल टेक्नोलॉजी में जेके टायर ने सबसे पहले ट्रक/बस रेडियल टायर्स (टीबीआर) का देश में पहली बार निर्माण कर अपना ऐतिहासिक नेतृत्व कायम रखा। रेडियल बाजार को विकसित करने की अपनी प्रतिबद्धता को ध्यान में रखते हुए टेक्नोलॉजी एवं नवाचार के माध्यम से नए-नए उत्पाद बाजार में पेश करते कम्पनी ने अपना दो करोड़वां रेडियल ट्रक/बस रेडियल टायर जारी किया।

जेके टायर के चेयरमेन एवं मैनेजिंग डायरेक्टर डॉ. रघुपति सिंघानिया ने कहा कि यह एकमात्र भारतीय कम्पनी है जिसने इस माइल स्टोन को छूने का गौरव हासिल किया। कम्पनी साल 2016 में ही 10 मिलियन टीआरबी टायर उत्पाद करने का सम्मान हासिल कर चुकी है और चार साल के भीतर ही अब इसने दो करोड़वां (20 मिलियन) टायर जारी कर एक नया माइलस्टोन प्राप्त किया।

यह एक लैण्डमार्क उपलब्धि है, जो न केवल जेके टायर की है अपितु इसके भागीदारों, विशेषकर ग्राहकों की जिन्होंने हमारी इंजीनियरिंग शक्तियों और टेक्नोलॉजीकल क्षमताओं पर अपना अटूट विश्वास दिखाया।

विष्णुदत्त विश्नोई :.....

(पृष्ठ एक का शेष)

कितना क्या नहीं करते पुलिसवाले? जब लोग तीज-त्यौहार मनाते हैं, धार्मिक स्थलों पर उमड़ते हैं, मेलों में मौज करते हैं, पुलिसवाले सर्दी-गर्मी-बारिश की परवाह किए बिना जनता के जान-माल की सुरक्षा में लगे रहते हैं। जान जोखिम में झोंककर कभी अपराधियों से भिड़ते हैं, कभी कोरोना के आगे जा खड़े होते हैं। कई बार महीनों तक छुट्टी नहीं मिलती। ज्यादातर पुलिसकर्मियों की पगार भी इतनी नहीं कि जमाने की दौड़ में जीतना तो दूर, अपने परिवार को इस दौड़ में शामिल भी कर पाएं। हमेशा भंवर में उलझे रहते हैं। एक कहता है, अपराधी को पकड़ो। दूसरा कहता है, छोड़ दो। भारी दबाव में काम करते हैं। इसके बावजूद कुछ अपवादों को छोड़ दें तो स्थिति संभालते ही हैं।

पुलिसकर्मियों को कई बार देखा है, आरोपियों को बार-बार अदालतों में ले जाते हुए। टूटी-खस्ताहाल गाड़ियों में। रास्ते में गाड़ी खराब हो जाए तो आरोपी को कसकर पकड़े अदालत की ओर पैदल ही बढ़ते हैं। अंधेरी रात हो या अलसाई सुबह, जब जहां से सूचना मिल जाए, दौड़ते हैं। ये भी तो इन्सान हैं। क्या होता है इनके पास? सिर्फ सिंघम जैसा हौसला ही होता है! कई बार सिर्फ लकड़ी के डंडों के सहारे हजारों लोगों की भीड़ के आगे जा खड़े होते हैं। फिर क्यों आत्महत्या करेगा सिंघम? जो पुलिसकर्मी हाथ में कोरा डंडा हो तो भी भारी भीड़ से न डरे, आधुनिक हथियारों और लग्जरी वाहनों से लैस अपराधियों से भिड़ जाए, गोलियों की बौछारों के बावजूद पीछे न हटे, सियासी लोगों और रसूखदारों का दबाव सहे, मौसम की मार सहे, अभाव झेले, काम का बोझ ढोए, वह छोटे-मोटे कारण से कैसे जीवन हार सकता है?

कानून-व्यवस्था को बनाए रखना है, जनता का सुख-चैन कायम रखना है तो सबसे पहले पुलिस का मनोबल बचाना होगा। इसके लिए इन सवालों का जवाब ढूंढना बहुत जरूरी है। अभी राजस्थान में गृह विभाग के मंत्री खुद मुख्यमन्त्री हैं, जो शायद इन दिनों केन्द्र सरकार को चिट्ठियां लिखने, हर मुद्दे पर केन्द्र सरकार की जिम्मेदारी चिन्हित करने, बैठकें बुलाकर दिशा-निर्देश देने की औपचारिकता निभाने और मीडिया के लिए विस्तृत प्रेसनोट जारी कराने में व्यस्त होंगे। ऐसे में खुद पुलिस को ही अपना घर संभालना होगा। नेता तो आते-जाते हैं।

सत्ता में पहले कोई और थे, अब कोई और। आगे कोई और होगा। स्थाई है तो सिर्फ जनता और पुलिस। पुलिस को चाहिए कि जितने भी जयकान्त शिकरे हैं, उनके लिए सिंघम बनकर दिखाए। जनता को भी चाहिए कि पुलिस में जितने भी सिंघम हैं, उनका सहयोग करे। पुलिस और जनता का नाता मजबूत होगा, तब ही जयकान्त शिकरे जैसे खलनायकों पर काबू पाया जा सकेगा अन्यथा विष्णुदत्त का बलिदान व्यर्थ ही जाएगा।

राणा प्रताप ने.....

(पृष्ठ तीन का शेष)

ईश्वरदानजी की 16वीं पीढ़ी में उनके पुत्र मणिराज सुखाड़िया विश्वविद्यालय में सेवारत थे। वे भी मेरे सम्पर्क में रहे।

ओसवालों ने सदैव ही महाराणाओं के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर अपनी सेवाएं अर्पित कर संकट की घड़ी में महत्वपूर्ण योग दिया है। महाराणा कुंभा के समय भी कुंभलगढ़ में नरसिंहदास के वंशज कोचरजी ने धनरक्षक की भूमिका निभाई जिसके कारण वे धनरेचा कहलाये। इनका परिवार कुंभलगढ़ में पीतल का व्यवसाय करता था। मुगलों की घेराबंदी के कारण कुंभलगढ़ के सारे मार्ग बंद हो गये। तोप के गोलों के लिए पीतल की आवश्यकता हुई। कोचरजी महाराणा के मरजीदान एवं विश्वस्त होने के कारण लोग उनसे ईर्ष्या करते थे। उन्होंने मौके का लाभ उठाते कोचरजी का नाम सुझाते हुए सोचा कि संकट की इस घड़ी में समर्थ होते हुए भी कोचरजी धन के प्रलोभन के कारण पीतल सप्लाई नहीं कर सकेंगे। इससे वे महाराणा की निगाहों से उतर जायेंगे।

राणा का आदेश पा धनरेचा इतनी पीतल नहीं होने पर निरूपाय और असहाय हो मां अम्बा की आराधना में लग गये। तीसरे दिन रात्रि को माता की प्रतिमा से एक महिला प्रकट हुई। बोली, 'सुबह होते दरबार में जा राणाजी को विनयपूर्वक मनचाही पीतल ले जाने के लिए आमंत्रित करना। तुम दुकान के भण्डार कक्ष से आज ही सारी पीतल तोल देना।' यही हुआ। भरे दरबार में कोचरजी का सभासदों के बीच निर्भय वाणी, अटूट विश्वास और गम्भीर चुनौतीपूर्ण दमखम देख सभी स्तब्ध रह गये। महाराणा ने संकट काल में इस सहयोग के लिए कोचरजी को पीतलिया सेठ के संबोधन से अलंकृत किया। कोचरजी ने पीतल के बदले एक भी पैसा नहीं लिया। कहा, 'वरोठमाता की कृपा से यह सब चमत्कार हुआ।' महाराणा ने तब वास्तुविद सूत्रधार मंडन के मार्गदर्शन में वरोठमाता का मन्दिर बनवाया। पीतलिया सेठ से आगे जाकर पीतलिया गोत्र ही बन गई। (2)

1- द्रष्टव्य निर्भय मीरां, डॉ. महेन्द्र भानावत, मुक्तक प्रकाशन, उदयपुर, 1994, पृ. 20

2- द्रष्टव्य डॉ. महेन्द्र भानावत द्वारा सम्पादित गोकुलचन्द पीतलिया के पिचाणु वर्ष पूर्ण करने पर प्रकाशित 'गोकुल गौरव' अभिनन्दन ग्रंथ का लेख- गौरव गोकुल वंश। गोकुल भवन, 117 भूपालपुरा, उदयपुर, वर्ष 2006, पृष्ठ 45-57

नर पेंथर ढूंढ़ रहे थार में सुरक्षा स्थल

उदयपुर (का. सं.)। आमतौर पर सदाबहार जंगलों और रिहायशी इलाकों के समीप रहने वाले पेंथर (तेंदुए) पिछले एक दशक से थार मरूस्थल की ओर रूख करने लगे हैं जबकि इन क्षेत्रों में इनकी कभी भी उपस्थिति नहीं थी। ये तथ्य हाल ही में उदयपुर के पर्यावरण वैज्ञानिक डॉ. सतीश शर्मा, डॉ. विजय कोली एवं माचिया बायोलोजिक पार्क जोधपुर के चिकित्साधिकारी डॉ. श्रवणसिंह राठौड़ ने द नेशनल एकेडमी ऑफ साईंसेस इण्डिया में प्रकाशित अपने शोधपत्र में उजागर किये।

शोधपत्र में बताया गया कि तेंदुआ एक विस्तृत क्षेत्र में पाई जाने वाली बड़ी बिल्ली की प्रजाति है जो संरक्षित एवं मानव प्रधान दोनों क्षेत्रों पर निवास करती है। भारत में यह मुख्यत: पर्णपाती, सदाबहार, झाड़ीदार जंगल और मानव निवास के किनारों पर पाई जाती है।

डॉ. विजय कोली ने बताया कि जोधपुर, जैसलमेर, चुरू, बाड़मेर और बीकानेर जिलों में यह प्रजाति अलग-अलग प्रकार के आवास क्षेत्रों में पाई गई। जैसे यूनिवर्सिटी कैम्पस, फैक्ट्री कैम्पस, खेतों के पास, कुंओं में घिरा हुआ झाड़ी विस्तार क्षेत्र और मनुष्य निवास क्षेत्रों के समीप। आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि सारे पेंथर नर थे। पेंथर्स की उपस्थिति 55.4 किलोमीटर से लेकर 413.4 किलोमीटर तक दर्ज की गई। अधिकतर मामलों में इन नर तेंदुओं को वन विभाग द्वारा पकड़कर पुन: अपनी निर्धारित सीमा क्षेत्र में छोड़ा गया।

डॉ. सतीश शर्मा का कहना है कि सामान्यत: पेंथर अपनी टेरेटरी

को बनाए रखते हैं। उस टेरेटरी में वह दूसरे पेंथर को प्रवेश नहीं करने देते। अत: निश्चित सीमा क्षेत्र में पेंथर की संख्या बढ़ने या साथ-साथ नर पेंथर की संख्या बढ़ने से एक निश्चित सीमा क्षेत्र में सभी नर पेंथर का रहना मुश्किल है। शक्तिशाली व प्रबल नर तो अपनी सीमा स्थापित कर लेते हैं परन्तु दुर्बल या हारे हुए नर पेंथर को वहां से विस्थापित होकर दूसरी जगह जाना पड़ता है। ऐसे में जब किसी क्षेत्र विशेष में पेंथर्स की संख्या बढ़ जाती है तो नए नर पेंथर को अपनी स्वतंत्र टेरेटरी की तलाश में अन्य इलाकों की ओर रूख करना पड़ता है। ऐसे मामले रणथंभौर में भी देखे गए हैं।

दूसरा कारण थार मरूस्थल में सिंचाई की सुविधाएं, खेती और पौधारोपण क्रियाओं में वृद्धि होने से वनस्पति आवरण की मात्रा बढ़ गई है। ये सारी स्थितियां भी पेंथर के लिए अनुकूल वातावरण मुहैया कराती हैं। तीसरा कारण वानस्पतिक आवरण एवं पानी की उपलब्धता के कारण थार मरूस्थल में पालतू एवं वन्यजीवों की संख्या में बढ़ोतरी हुई है। इस कारण पेंथर को सालभर शिकार मिल जाता है।

डॉ. श्रवणसिंह राठौड़ के अनुसार अभी केवल नर तेंदुए ही थार मरूस्थल में प्रवेश कर रहे हैं। भविष्य में मादा तेंदुए भी स्थायी रूप से अपनी उपस्थिति स्थापित कर सकती हैं। एक संभावना यह भी बनती है कि भविष्य में इन क्षेत्रों में मानव-तेंदुओं के संघर्ष में वृद्धि हो सकती है।

कहावतों के कहकहे (15)

(135) काती कुत्ती न माह बिलाई फागण मरद न चेत लुगाई

(136) पराई गांड में मूलो जावै हांकड़ो कै मोकलो

(137) गोली जाय गांड में नै भड़ीका ऊं काम

(138) गांडू री दोस्ती नै जीवरो जंजाल

(139) गरज व्है तो तीन दाण मराणी पड़ै

(140) रामजी री घोड़ी नै टको दे ई नै फोड़ी

(141) वेणो जाणो कई नीं है खाली चूतिया रा चक्कर है

(142) हाजी गांड रै आकड़ो लगावणो

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की 100 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से कुछ तो अप्राप्य हैं। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

पुस्तक का नाम	मूल्य
लोकनाट्य परंपरा	अप्राप्य
मरवण मांडे मांडणा	अप्राप्य
मेहंदी राचणी	अप्राप्य
काजल भरियो कूंपलो	अप्राप्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/
परंपरा का लोक	475/
आदिवासी लोक	350/-
जनजाति जीवन और संस्कृति	295/-
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	200/-
आदिवासी जीवनधारा	395/-
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	150/-
राजस्थान के लोकनृत्य	200/-
गुजरात के लोकनृत्य	200/-
राजस्थान के लोक देवी देवता-	150/-
भारतीय लोकमाध्यम	75/-
अजूबा भारत	200/-
पाबूजी की पड़	50/-
लोककलाओं का आजादीकरण	250/-
उदयपुर के आदिवासी	250/-
निर्भय मीरां	250/-
रंग रूड़ो राजस्थान	100/-
कुंवारे देश के आदिवासी	100/-
जिन्हें मैं जानता हूं	100/-
जैन लोक का पारदर्शी मन	150/
गवरी	60/
राजस्थान के थापे	150/
कठपुतली	60/
जनजातियों में गाथा गायकी	350/

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
साहित्यिक चौपाल	500/
वार्षिक संस्थागत	300/
वार्षिक व्यक्तिगत	250/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(Shabd Ranjan, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

सुविधा और प्राप्ति के लिए कृपया रचनाएं व समाचार ई-मेल से भेजे।

shabdranjanudr@gmail.com

विवाह के विविध संस्कार एवं रीति प्रसंग (3)

पिछले अंक में राजस्थान में प्रचलित विवाह सम्बन्धी विविध संस्कारों एवं लोकाचारों के संबंध में जानकारी प्रस्तुत की गई थी। यहां पढ़िये उससे आगे-

(14) घोड़ी चढ़ना :

दूल्हे की बरात के लिए उसके स्वगृह से घोड़ी चढ़ाई की रस्म की जाती है। सजाधजा दूल्हा शादी करने जा रहा है। सभी पुरूष-महिलाएं सजेधजे खड़े हैं। घोड़ी भी

सजीसजाई है। दूल्हा राजा घोड़ी पर सवार होता है। धोबी, कुम्हार, मालिन, तेली, खाती, लखारा, सेवग, नाई, सोनी सभी ने विवाहोत्सव के दौरान जो कार्य किया, अपनी-अपनी सेवाएं दीं उनका बंधाबंधाया नेगचार दिया जाता है। घर की बेटी भावज, भुआ घोड़ी की वाग (लगाम) पकड़ नेग मांगती है। उन्हें भी उनके हिस्से का नेग दिया जाता है।

दूल्हे की मां अपनी साड़ी के पल्लू में घोड़ी को चने खिलाती है। उसकी चोटी गूंथती है। बालों में मेंहदी लगाती है। तिलक करती है और दूल्हे को साड़ी के पल्लू की आड़ में स्तनपान कराने का उपक्रम करती है। यह प्रतीक भाव इस बात का प्रमाण है कि जो पुत्र विवाह के लिए घर से प्रस्थान कर रहा है उसकी विजय हो। अपने कार्य में वह सफल हो और माता ने जो दूध पिलाया है उसकी लाज बनी रहे। उसे लज्जित न होने दे। पहले युद्धभूमि में प्रस्थान करने से पूर्व भी माताएं अपने लालों को उनके तिलक कर उनकी आरती उतार ऐसे ही विदाई देती थीं और कहती थीं- ''हे लाल! युद्ध में जाकर बड़ी बहादुरी से अपना शौर्य प्रदर्शित करना। विजीत होकर आना। मेरे दूध को लज्जित मत होने देना और यदि कहीं तुम्हें लगे कि बाजी हाथ से निकली जा रही है तो लौटकर मुंह मत दिखाना। देश के खातिर अपने प्राणों का उत्सर्ग कर देना।''

घोड़ी संबंधी गीतों के नमूने-

(क) घोड़ी उदियापुर सूं आई ओ राज
तेजण खड़ी रे सुहावणी
घोड़ी भंडा बजाई, चौरासी बजाई
घूघरा घमकावत आई ओ राज।

(ख) चन्द्रमुखी या चन्द्रलोक सूं आई...

(ग) घोड़ी नाचत कूदत रंग रे गई
या तो गई रे बजारां री हाट

(घ) घोड़ी ने दाल चणा री चगावोजी बनां

(15) टूंटिया निकालना :

दूल्हे की बारात चली जाने पर पीछे केवल महिलाएं रह जाती हैं जो घर की रखवाली हेतु रातभर चौकसी बाबत् आपस में मिलकर विनोद करती हैं। इस विनोद स्वरूप वे दूल्हे की तरह बारात निकालती हैं। इसमें सभी महिलाएं ही होती हैं। आगे ही आगे महिला अपने हाथ में ढोल की जगह फूटा कनस्तर (पीपा) लिए बेलन से बजाती चलती है। उसके पीछे बांकिये की बजाय भूंगली से हवा देती दूल्हा बनी महिला चलती है। कहीं-कहीं वर की तरह स्वांग कर महिला को घोड़े पर बिठा दी जाती है। इससे किसी फर्जी मकान पर तोरण भी वंदवा दिया जाता है। उसके पीछे महिलाओं का समूह हास्य-विनोद करता गाता चलता है।

गांव के मुख्य स्थलों से होती इस हास्यास्पद बरात को देख सभी समझ जाते हैं कि नकली बरात सूचक यह टूंटिया निकाला गया है। कहा यह भी जाता है कि यह टूंटिया असली बरात को बुरी नजर से बचाने का टोटका है साथ ही उस शुभ शकुन का भी प्रतीक है कि बरात वधू सहित बिना किसी विघ्न-बाधा के शांतिपूर्वक लौट आये। बरात के इस नकली स्वांग में सभी महिलाएं बड़े उन्मुक्त एवं स्वच्छंद भाव से खुलकर हास्य विनोद करती हैं। इस विनोदात्मक प्रहसन में रात्रि कब व्यतीत होती है, पता ही नहीं चलता। घर की रक्षा-सुरक्षा भी हो जाती है। टूंटिया को कहीं-कहीं खोड़िया भी कहते हैं। वर बनने वाली वधू से छोटी उम्र लिए होती है।

(16) ख्याल-झामटड़े :

विवाह सूत्र में बंधने से कुछ दिन पूर्व से ही विवाह-गृह की महिलाएं मनोविनोद स्वरूप देर रात तक नाना प्रकार के स्वांग-वेश निकालकर भरपूर मनोरंजित होती हैं। इस प्रहसन-विनोद में महिलाएं ही प्रदर्शक तथा दर्शक होती हैं। इसमें महिलाओं की वेशभूषा एवं साजसज्जा की प्रमुखता नहीं होकर घरेलू वातावरण एवं बोलचाल में जो आपसी संवादमूलक स्वांग प्रस्तुति करती हैं वे शील-मर्यादा के सभी बांधों से मुक्त-उन्मुक्त होते हैं। इसीलिए एक उम्र के बाद समझू-सयाने बच्चे भी इसमें शरीक नहीं होने दिये जाते हैं।

इन ख्यालों के लिए किसी तरह की कोई खास तैयारी नहीं की जाती। प्रति रात्रि गीत गाने के बाद देर रात्रि को ख्याल-झामटड़े किये जाते हैं। इसके लिए किसी पूर्वरंग, भूमिका, सज्जागृह, रिहर्सल की आवश्यकता नहीं होती। वहां बैठे-बैठे ही महिलाएं प्रेरित होती हैं और स्वांग भर प्रस्तुत हो जाती हैं। महिलाएं पढ़ीलिखी नहीं होने पर भी जिस स्वाभाविक ढंग से अपना बुद्धिचार्तुय तथा समझदृष्टि का बखान करती हैं, चकित रह जाना पड़ता है। ऐसे 50 से अधिक स्वांग-रूपों का अध्ययन कर मैंने लिखा है। इनमें गाडोल्या, घूघरी बांटना, बेरकी, टीपणा बांचना, बाबाजी, भायली, ललवा, भंगन, टोडर माता, दलजी, हरजुड़ा, बिच्छु चढ़ना, भीलजी, भाभीसा, चटणी, तम्बाकू जैसे अनेक स्वांग हैं।

(17) रावजी का मुजरा झेलना :

बरात की प्रस्थानगी के वक्त घोड़ी चढ़ा दूल्हा गांव के ठिकानेदार सामंत अथवा जागीरदार को मुजरा करने उसकी हवेली (रावले) के भीतर ले जाया जाता है तब बाजे बजाना बंद कर दिया जाता है। रावतजी को सूचना मिलने पर वे अपने महल के गोखड़े से मुजरा झेलकर विदाई देते हैं। यों भी वर अथवा वधू की विवाह पूर्व वनोली निकाली जाती है तब रास्ते में यदि रावला पड़ता है तो कुछ समय के लिए वहां बाजेवाले बाजा बजाना बंद कर देते हैं। वहां से गुजरने के बाद ही पुन: बाजों का दौर प्रारंभ होता है। इस अवसर का गीत है-

थाणी जाने मोटा-मोटा राजवी चढ़िया
थां पण क्यूं थी लाड़लड़ाव
अड़ करीरया.....

अर्थात् आपके घर-परिवार में बड़े-बड़े राजकुमारों की बरात चढ़ी है। आप हमारे वींद राजा से लाड़प्यार नहीं कर क्यों जिद्द किये हैं? रावजी के गवाक्ष से दरसन देने पर ही वनोली वहां से आगे बढ़ती है।

(18) बरात आना :

मुहूर्त के अनुसार सांझी दिलाने के बाद प्रति रात्रि को वर की वनोली निकाली जाती है। यह वनोली पहले पैदल ही निकाली

जाती थी। कई जातियों में आज भी पैदल ही निकाली जाती है। वनोली में एक रास्ते से निकलकर गांव के मुख्य मार्गों का चक्कर लगाकर दूसरे रास्ते द्वारा पुन: घर लौटा जाता है। आगे ही आगे ताशे वाले चलते हैं। पीछे ही पीछे औरतें गीत गाती हुई चलती हैं। वनोली के समय वर को विशेष प्रकार की पोशाक पहनाई जाती है।

शादी के लिए प्रस्थान करते समय वर के साथ बरात के रूप में सगे संबंधियों, रिश्ते-नातेदारों का जो समूह होता है उसे बरात तथा समूहजन को बराती कहते हैं। जब आवागमन के साधन नहीं थे तब बरात बैलगाड़ियों में ले जाई जाती थी। उन गाड़ियों में एक गाड़ी खाद्य-सामग्री-रसद की होती थी जो सदैव बरात से पहले गन्तव्य स्थान पर पहुंच भोजनादि की व्यवस्था करती थी। ताशे अथवा बाजे बजाने वालों की गाड़ी भी अलग होती थी। बरात की गाड़ियों तथा बैलों को विशेष रूप से सजाया जाता था। वर के लिए घोड़ी होती जो सोने -चांदी के आभूषणों से सजी रहती थी। बैलों के गलों में घंटियां अथवा टोकरें तथा घोड़ी के पांवों में घूघरे बांधे जाते थे। बरात का यह दृश्य बड़ा ही भव्य तथा आकर्षक बन जाता था। कुछ बराती अपनी व्यक्तिगत सवारी जैसे ऊंट, घोड़े भी बरात में ले जाते थे जो बड़े सजेधजे होते। दूल्हे की घोड़ी बाजों की धुन पर कभी दो-दो तो कभी तीन-तीन पांवों पर नाच के विविध ठुमके लिए शोभित होती। भांत-भांत की घूमरें लेतीं पूरी बरात की शोभा में चार चांद लगात देतीं। सम्पन्न लोग नौटंकियों की मधुर स्वरलहरी तथा पातरों के नाच द्वारा बरात की यादगीरी छोड़ते।

(19) वींद कोथली :

वींद से तात्पर्य वर अथवा दूल्हे से है। दूल्हे के ब्याह में बरात जाने से लेकर पुन: लौटने तक के खर्च के लिए एक विशिष्ट कोथली होती है। लाल रंग की यह कोथली तीन पड़ लिए होती है। पड़ से तात्पर्य पड़दा

अथवा घर होता है। कोई पौन-एक फीट लंबी तथा आधा फीट की चौड़ाई लिए यह कोथली बटुए का काम करती है। इसके विभिन्न हिस्सों (पड़ों) में एक में रोकड़ रूपये, दूसरे में रेजगारी (छुट्टे पैसे) तथा एक में नोट रखे जाते हैं। यह कोथली घर का कोई बुजुर्ग रखता है। कोथली रखने वाला भरोसेवाला तथा सम्माननीय समझा जाता है। आवश्यकतानुसार समय-समय पर विविध नेगचार संबंधी दूल्हे की ओर से जो खर्चा वहन करना होता है वह इस कोथली में से किया जाता है। मेरे पास एक ऐसी ही पुरानी कोथली रखी हुई है जिससे मेरे बड़े भाई साहब, मेरी स्वयं की और मेरे आत्मज डॉ. तुक्तक का विवाह सम्पन्न हुआ।

(20) नूता देना :

विवाहोत्सव में समूह भोज के दौरान सगे समधी, अड़ोसी-पड़ोसी तथा अन्य रसूकदारों को जीमने के लिए आमंत्रित किया जाता है। यह आमंत्रण सेवग द्वारा कराया जाता है जिसे नूता देना कहते हैं। यह नूता प्राय: तीन तरह का दिया जाता है। घर के केवल एक पुरूष को जीमने बुलाने के लिए दिया जाने वाला नूता 'पागड़ी बंध नूता' कहलाता है जबकि परिवार के सभी सदस्यों को आमंत्रित करने के लिए 'हाव हंगरी' नूता दिया जाता है। इसी प्रकार उस घर में यदि कोई उनका मेहमान आया होता है उस स्थिति में सबको निमंत्रित करने के लिए 'पाई पामणा सूदी' अर्थात् घर के मेहमानों सहित जीमने आने को कहा जाता है। यों नूता का अर्थ ही जीमने, भोजन करने के लिए निमंत्रित करने अथवा नूतने से है।

(-प्रस्तुति : शब्द रंजन टीम)

- क्रमश:

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।